BURAIYO KI MAA (HINDI)

शराब के अह़काम और इस के नुक़्सानात पर मुश्तमिल इब्रत अंगेज़ बयान

बुराइयों की मां

- अह़कामे ख़ुदावन्दी से खुली जंग 14
- शराब के मुतअ़ल्लिक़ नाज़िल होने वाली 4 आयाते मुबारका 27
- शराब के नुक़्सानात 41
- शराब और मौत 58
- शराब नोशी की दस बुरी ख़स्लतें 68
- शराबी की सज़ा 79
- शराबी की हिदायत का सबब 102

: पेशकश :

मर्कज़ी मजलिसे शूरा

(दा'वते इस्लामी)

مکتبۃ المدینہ ®

(दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी र-ज़वी** دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِیَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰھُمَّ افْتَحْ عَلَیْنَا حِکْمَتَکَ وَانْشُرْ عَلَیْنَا رَحْمَتَکَ یَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِکْرَام

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले।

(اَلْمُسْتَطْرَف ج ١ ص ٤٠ دارالفکربیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
बक़ीअ़
व मग़फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी इस इल्म पर अ़मल न किया)

(تاریخِ دمشق لابن عساکر، ج ٥١ ص ١٣٨ دار الفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़्ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

बुराइयों की मां

येह किताब **मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या** (दा'वते इस्लामी) ने "उर्दू" ज़बान में पेश की है। **मजलिसे तराजिम, बरोडा** (दा'वते इस्लामी) ने इस किताब को "हिन्दी" **रस्मुल ख़त़** में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से **शाएअ़** करवाया है।

इस में अगर किसी जगह **कमी-बेशी** या **ग़-लती** पाएं तो **मजलिसे तराजिम** को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, e-mail या sms) **मुत्त़लअ़** फ़रमा कर षवाब कमाइये।

उर्दू से हिन्दी (रस्मुल ख़त़) का तराजिम चार्ट

त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
झ = جھ	ज = ج	ष = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ	थ = تھ
ढ = ڈھ	ध = دھ	ड = ڈ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح
ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر	ज़ = ذ

अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स = ص	श = ش	स = س
ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق	फ़ = ف	ग़ = غ	’ = عُ
य = ی	ह = ہ	व = و	न = ن	म = م	ल = ل	घ = گھ
ू = ٗ	ु = ُ	ि = ِ	- = َ	ी = ئ	ु = وُ	ा = آ

-: राबित़ा :-

मजलिसे तराजिम, मक्तबतुल मदीना (दा'वते इस्लामी)

मदनी मर्कज़, क़ासिम हाला मस्जिद, सेकन्ड फ़्लोर,

नागर वाड़ा मेन रोड, बरोडा, गुजरात, अल हिन्द

Mo. + 91 9327776311

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

शराब के अह़काम और इस के नुक़्सानात
पर मुश्तमिल इ़ब्रत अंगेज़ बयान

बुराइयों की मां

-: पेशकश :-

मर्कज़ी मजलिसे शूरा (दा'वते इस्लामी)

-: नाशिर :-

मक्तबतुल मदीना

सिलेक्टेड हाऊस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, मदीनतुल औलिया, अह़मदाबाद-1, मो. +919327168200

الصلوۃ والسلام علیک یارسول اللہ   وعلی آلک واصحابک یا حبیب اللہ

नाम किताब : बुराइयों की मां

पेशकश : मर्कज़ी मजलिसे शूरा (दा'वते इस्लामी)

सिने तबाअ़त : रबीउ़ल आख़िर, सि. 1435 हि.

नाशिर : मक्तबतुल मदीना, अहमदाबाद-1

मक्तबतुल मदीना की मुख़्तलिफ़ शाख़ें

❁... देहली : 421, उर्दू मार्केट, मटया महल, जामेअ़ मस्जिद, देहली-6 फ़ोन 011-23284560

❁... मुम्बई : 19-20, मुहम्मद अ़ली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई, फ़ोन 022-23454429

❁... नागपूर : सैफ़ी नगर रोड, ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, मोमिन पूरा, नागपूर, फ़ोन 9326310099

❁... अजमेर : 19 / 216, फ़लाहे दारैन मस्जिद के क़रीब, नला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, (0145) 2629385

❁...हुबली : A.J मुधल कोम्पलेक्स, A.J मुधल रोड, ओल्ड हुबली, कर्नाटक - 08363244860

❁... हैदराबाद : मक्तबतुल मदीना, मुग़ल पूरा, पानी की टंकी, हैदराबाद, (040) 2 45 72 786

E.mail ilmia26@yahoo.com

www.dawateislami.net

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह किताब छापने की इजाज़त नहीं है ।

याद दाश्त

दौराने मुत़ालआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। إِنْ شَآءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ इ़ल्म में तरक़्क़ी होगी।

उ़नवान	सफ़ह़ा	उ़नवान	सफ़ह़ा

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

"शराब के ख़िलाफ़ जंग" के तेरह हुरूफ़ की निस्बत से इस रिसाले को पढ़ने की "13 निय्यतें"

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **:** نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ

"मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।"

(المعجم الكبير للطبراني، الحديث: ۵۹۴۲، ج۶، ص ۱۸۵)

दो मदनी फूल :-

﴾1﴿ बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का षवाब नहीं मिलता।
﴾2﴿ जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना षवाब भी ज़ियादा।

﴾1﴿ हर बार ह़म्द व ﴾2﴿ सलात और ﴾3﴿ तअ़व्वुज़ व ﴾4﴿ तस्मिय्या से आग़ाज़ करूंगा। (इसी सफ़्हे पर ऊपर दी हुई दो अ़रबी इबारात पढ़ लेने से इन निय्यतों पर अ़मल हो जाएगा) ﴾5﴿ रिज़ाए इलाही के लिये इस रिसाले का अव्वल ता आख़िर मुत़ालआ़ करूंगा। ﴾6﴿ ह़त्तल वस्अ़ इस का बा वुज़ू और क़िब्ला रू मुत़ालआ़ करूंगा ﴾7﴿ क़ुरआनी आयात और ﴾8﴿ अह़ादीषे मुबारका की ज़ियारत करूंगा ﴾9﴿ जहां जहां "**अल्लाह**" का नामे पाक आएगा वहां عَزَّوَجَلَّ और ﴾10﴿ जहां जहां "**सरकार**" का इस्मे मुबारक आएगा वहां صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पढ़ूंगा। ﴾11﴿ इस ह़दीषे पाक "تَهَادَوْا تَحَابُّوْا" एक दूसरे को तोह़फ़ा दो आपस में मह़ब्बत बढ़ेगी (مؤطا امام مالک، الحدیث: ۱۷۳۱، ج۲، ص ۴۰۷) पर अ़मल की निय्यत से (एक या ह़स्बे तौफ़ीक़) येह रिसाला ख़रीद कर दूसरों को तोह़फ़तन दूंगा। ﴾12﴿ शैत़ान के ख़िलाफ़ जंग जारी रखूंगा। ﴾13﴿ किताबत वग़ैरा में शरई ग़लत़ी मिली तो नाशिरीन को तह़रीरी त़ौर पर मुत्तलअ़ करूंगा। اِنْ شَآءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ

(नाशिरीन को किताबों की अग़लात़ सिर्फ़ ज़बानी बता देना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता)

फ़ेहरिस्त

दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत	7	मुस्लिम व ग़ैर मुस्लिम में फ़र्क़	40
बुराइयों की मां	8	शराब के नुक़्सानात	41
बोतल में शराब थी या सिर्का ?	10	शराब के मआ़शी नुक़्सानात	41
मख़्लूक़ का डर	11	शराब के त़िब्बी नुक़्सानात	43
शराब नोशी की महाफ़िल	13	शराब के अख़्लाक़ी व मुआ़शरती नुक़्सानात	45
एह़कामे ख़ुदावन्दी से खुली जंग	14	शराबी को अपने पराए की तमीज़ नहीं रहती	46
एक गुनाह 10 ऐ़ब	17	शराबी और इस का ख़ानदान	46
शराब किसे कहते हैं ?	19	शराबियों से दूर रहने का हुक्म	48
ख़म्र को ख़म्र कहने का सबब	20	शहज़ादए रसूल के अ़त़ा कर्दा मदनी फूल	50
शराब का हुक्म	21	शराब और शैत़ान	52
शराब की कमाई का हुक्म	21	शराबियों का शैत़ान	53
शराब ह़राम है थोड़ी हो या ज़ियादा	22	शराब और अ़क़्ल	54
ख़म्र (शराब) के मुतअ़ल्लिक़ आठ अह़काम	24	पेशाब से वुज़ू करने वाला शराबी	55
ह़ुरमते शराब पर अ़ल्लामा शामी के दस दलाइल	25	शराबी की ख़त्म न होने वाली ह़िर्स	55
शराब कब ह़राम हुई ?	27	सब से बड़ा गुनाह	56
"शराब" के मुतअ़ल्लिक़ नाज़िल होने वाली 4 आयाते मुबारका	27	अन्धा शराबी	57
ब तदरीज ह़ुरमत में ह़िक्मत	31	शराब और मौत	58
सरकार की पसन्द	32	शराब पर पाबन्दी की कोशिशें	59
आ'ला ह़ज़रत के वालिदे माजिद मौलाना नक़ी अ़ली ख़ान		शराबी और इस का ईमान	61
عليه الرحمة के शराब के मुतअ़ल्लिक़ इब्रत अंगेज़ मदनी फूल	32	शराबी के ईमान के मुतअ़ल्लिक़ 5 फ़रामीने मुस्त़फ़ा	61
शराब और सराब में फ़र्क़	33	ग़ाफ़िल शराबियों का अन्जाम	63
ह़ुरमत का नफ़ाज़	34	बत़ौरे दवा शराब पीना	65
सह़ाबए किराम का अ़मल	37	शराब के सबब ईमान से मह़रूमी	66

गधे को घोड़ा बनाने की कोशिश	67	लोहे के गुर्जों से इस्तिक़बाल	86
शराब नोशी की दस बुरी ख़स्लतें	68	शराबी की सज़ाओं का ख़ौफ़नाक मन्ज़र	87
शराबी पर ला'नत	71	शराबी और जन्नती शराब	91
शराब के क़त्रे से भी नफ़रत	72	शराबी और जन्नत की ख़ुश्बू	91
शराब के एक घूंट की सज़ा	72	कर ले तौबा रब्ब की रह़मत है बड़ी	93
शराबी पर ख़ुदा की नाराज़ी	73	तौबा का दरवाज़ा	94
शराबी और उस की नमाज़	74	शराबी वली बन गया	94
"अस्बाबे ज़वाले मुस्लिमीन" के पन्दरह हुरूफ़ की निस्बत से मुसलमानों के ज़वाल के 15 अस्बाब	77	बा अदब बा नसीब बे अदब बे नसीब	96
		शराबी की बख़्शिश हो गई	97
अ़ज़ाब की मुख़्तलिफ़ सूरतें	78	भयानक क़ब्रें	99
शराबी की सज़ा	79	शराबी का अन्जाम	100
शराबी की दुन्या में सज़ा	80	ख़िन्ज़ीर नुमा मुर्दा	100
शराबी की क़ब्र में सज़ा	81	आग की कीलें	101
मुर्दा औ़रत ने कफ़न चोर को थप्पड़ मारा	82	आग की लपेट में	101
बच्चा बुड्ढा हो गया	83	जवानी में तौबा का इन्आ़म	101
जहन्नम की गरदन	83	शराबी की हिदायत का सबब	102
लफ़्ज़े "शराबी" के पांच हुरूफ़ की निस्बत से बरोज़े क़ियामत शराबी की 5 सज़ाएं	85	हम क्यूं परेशान हैं ?	105
		नमाज़ की बरकतें	106
क़ियामत में शराबी का हुल्या	85	बे नमाज़ी का होलनाक अन्जाम	107
मुर्दार से ज़ियादा बदबूदार	85	शराबी, मुबल्लिग़ कैसे बना ?	108

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

बुराइयों की मां (1)

दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत

एक सूफ़ी बुज़ुर्ग رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने मिश्त़ाह़ नामी एक शख़्स को मरने के बा'द ख़्वाब में देख कर पूछा : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तेरे साथ क्या मुआमला फ़रमाया ?" बोला : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझे बख़्श दिया।" मैं ने वजह पूछी तो उस ने बताया : "एक बार मैं ने एक ह़दीषे पाक के बहुत बड़े आ़लिम से अ़र्ज़ की, कि मुझे कोई ह़दीषे पाक सनद के साथ लिखवा दीजिये। चुनान्चे ह़दीषे पाक लिखवाते हुए जब **सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का नामे नामी आया तो मुह़द्दिष साहि़ब ने दुरूदे पाक पढ़ा, उन्हें देख कर मैं ने भी बुलन्द आवाज़ से दुरूदे पाक पढ़ा, जब वहां बैठे हुए लोगों ने सुना तो उन्हों ने भी दुरूदे पाक पढ़ा जिस की बरकत से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हम सब को बख़्श दिया।" (القربۃ لابن بشکوال، الحدیث:۲۳، ص۲۶ دارالکتب العلمیۃ بیروت)

---

(1).... येह बयान मुबल्लिगे़ दा'वते इस्लामी व निगराने मर्कज़ी मजलिसे शूरा ह़ज़रते मौलाना मुह़म्मद इमरान अ़त्तारी سَلَّمَہُ الْبَارِی ने कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के आ़लमी मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना बाबुल मदीना कराची में बरोज़ जुमा'रात 22 जनवरी सि. 2009 ई. ब मुत़ाबिक़ 25 मुह़र्रमुल ह़राम 1430 हि. को हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में फ़रमाया। ज़रूरी तरमीम व इज़ाफ़े के बा'द पेशे ख़िदमत है।

आ'माल न देखे येह देखा मह़बूब के कूचे का है गदा

मौला ने मुझे यू बख़्श दिया سُبْحٰنَ اللّٰہ سُبْحٰنَ اللّٰہ

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आपने कि बुलन्द आवाज़ से दुरूदो सलाम पढ़ने की बरकत से तमाम शुरकाए इजतिमाअ़ की मग़्फ़िरत हो गई तो निय्यत कर लीजिये कि जब भी तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ या किसी भी दीनी इजतिमाअ़ में शिर्कत करूंगा तो मौक़अ़ की मुनासबत से बुलन्द आवाज़ से दुरूदे पाक पढ़ूंगा। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

बुराइयों की मां

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने एक दिन ख़ुत़्बा देते हुए इरशाद फ़रमाया कि मैं ने हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को येह इरशाद फ़रमाते सुना : **बुराइयों की मां** (या'नी शराब) से बचो क्यूंकि तुम से पहले एक शख़्स था जो लोगों से अलग थलग रह कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत किया करता था, एक औ़रत उस की मह़ब्बत में गिरिफ़्तार हो गई और उस की त़रफ़ ख़ादिम को कहला भेजा कि गवाही के सिलसिले में तुम्हारी ज़रूरत है। चुनान्चे वोह वहां पहुंच गया और जिस दरवाज़े से अन्दर दाख़िल होता वोह बन्द कर दिया जाता यहां तक कि वोह एक निहायत ह़सीनो जमील औ़रत के पास जा पहुंचा जिस के क़रीब एक लड़का खड़ा था और वहां शीशे का एक बड़ा बरतन था जिस में शराब थी। वोह औ़रत

बोली : "मैं ने तुम्हें किसी क़िस्म की गवाही देने के लिये नहीं बुलाया बल्कि इस लिये बुलाया है कि तुम इस लड़के को क़त्ल कर दो या मेरी नफ़्सानी ख़्वाहिश को पूरा कर दो **या फिर शराब का एक जाम पी लो**, अगर इन्कार किया तो मैं शोर करूंगी और तुम्हें ज़लीलो रुसवा कर दूंगी।" जब उस शख़्स ने देखा कि छुटकारे की कोई राह नहीं तो **शराब पीने पर राज़ी हो गया।** अ़ौरत ने शराब का एक जाम पिलाया तो उस ने (नशे में झुमते हुए) **मज़ीद शराब मांगी, वोह इसी त़रह़ शराब पीता रहा यहां तक कि न सिर्फ़ उस अ़ौरत के साथ मुंह काला किया बल्कि लड़के को भी क़त्ल कर दिया।** शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मज़ीद फ़रमाया : "पस तुम शराब से बचते रहो, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! बेशक ईमान और शराब नोशी दोनों किसी एक ही शख़्स के सीने में कभी जम्अ़ नहीं हो सकते, (अगर कोई ऐसा करेगा तो) ईमान व शराब में से एक, दूसरे को निकाल बाहर करेगा।"

(الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب الاشربۃ، فصل فی الاشربۃ، الحدیث:۵۳۲۴،ج۷،ص۳۶۷)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! उस आ़बिद से जब बदकारी का कहा गया तो उस ने मन्अ़ किया कि नहीं नहीं मैं येह नहीं कर सकता। क़त्ल का कहा गया तो बोला कि मैं येह नहीं कर सकता लेकिन जब येह कहा गया कि अगर येह दोनों काम नहीं कर सकता तो सिर्फ़ शराब ही पी ले। नादान आ़बिद समझा कि शराब पीने से दोनों ख़त़रनाक कामों या'नी बदकारी और क़त्ल करने से जान छूट जाएगी। चुनान्चे उस ने शराब पी ली तो इस की नुहूसत से बदकारी भी कर ली और क़त्ल भी। **ह़क़ीक़त में उस आ़बिद ने**

गुनाहों की चाबी को इख़्तियार कर लिया था, शराब पीने के एक गुनाह को इख़्तियार करने से कई गुनाहों के दरवाज़े खुल गए। शराब की इन्ही ख़राबियों की वजह से इस्लाम ने इसे हमेशा के लिये ह़राम क़रार दिया है मगर हमारे मुआ़शरे में जहां दूसरी बे शुमार बुराइयां पनप रही हैं इस में से शराब नोशी एक वबा की शक्ल इख़्तियार करती जा रही है जिस ने मुआ़शरे का चेहरा तक मस्ख़ कर दिया है। येह ह़राम काम पहले वक़्तों में भी नाफ़रमान लोग किया करते थे मगर छुप कर शराब पीते ताकि कोई देख न ले। चुनान्चे,

बोतल में शराब थी या सिर्का ?

मरवी है कि अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ एक बार मदीनए मुनव्वरा की एक गली से गुज़र रहे थे कि अचानक आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ ने एक नौजवान को देखा जिस ने कपड़ों के नीचे एक बोतल छुपा रखी थी। आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ ने पूछा : "ऐ नौजवान ! येह कपड़ों के नीचे क्या छुपा रखा है ?" उस बोतल में शराब थी, नौजवान ने शर्मिन्दगी मह़सूस की, कि वोह अमीरुल मोअमिनीन को येह कैसे बताए कि इस बोतल में शराब है। चुनान्चे उस ने फ़ौरन दिल ही दिल में दुआ़ की : "या **अल्लाह** ! मुझे ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ के सामने शर्मिन्दा और रुसवा न फ़रमाना, आज मेरी पर्दापोशी फ़रमा ले आयन्दा कभी शराब नहीं पियूंगा।" इस के बा'द नौजवान

ने अ़र्ज़ किया : "ऐ अमीरल मोअमिनीन ! येह सिर्का (की बोतल) है।" आप رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया मुझे दिखाओ ! जब उस ने वोह बोतल आप के सामने की और ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ ने उसे देखा तो वोह वाक़ेई सिर्का था।

(مکاشفۃ القلوب، الباب الثامن فی التوبۃ، ص ۲۷۔۲۸)

तूने दुन्या में भी ऐ़बो को छुपाया या ख़ुदा
ह़श्र में भी लाज रख लेना कि तू सत्तार है

मख़्लूक़ का डर

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ज़रा ग़ौर कीजिये कि पहले ज़माने में गुनाहगार बन्दे इस बात से डरते थे कि लोग उन के गुनाह से आगाह हो जाएंगे और उन्हें उन के सामने शर्मिन्दा होना पड़ेगा। अगर कभी ऐसा मौक़अ़ आता तो वोह बारगाहे रब्बुल इ़ज़्ज़त में अपने गुनाहों की पर्दापोशी के लिये आ़जिज़ी व इन्किसारी से गिड़ गिड़ाते हुए तौबा कर लेते जैसा कि उस नौजवान ने अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ के डर से ख़ुलूसे दिल से तौबा की तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उस की तौबा क़बूल करते हुए उस शराब को सिर्के में बदल दिया ताकि कोई उस के गुनाहों से आगाह न हो पाए क्यूंकि जब कोई गुनाहों पर शर्मिन्दा हो कर तौबा करता है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस की नाफ़रमानियों की शराब को फ़रमा बरदारी के सिर्के से बदल देता है। मगर हाए अफ़्सोस ! सद अफ़्सोस ! एक वोह दौर था जब निगाहों में दूसरों

का पास लिह़ाज़ था और शराब पी जाती तो डर होता कोई देख न ले और एक आज का दौर है जिस में बे ह़याई इस क़दर अ़ाम हो चुकी है कि अब सरे अ़ाम शराब नोशी की मह़फ़िलें होती हैं। बा'ज़ लोग अपना मक़ाम (status) बर क़रार रखने या दिखाने के लिये अहम तक़रीबात में शराब का ख़ास एहतिमाम करते हैं जिस से आज की नौजवान नस्ल शराब की अ़ादी होती जा रही है। मर्द तो मर्द, अ़ौरतें भी इस का शिकार हो चुकी हैं। एक मुसलमान का किसी के लिये यूं सरे अ़ाम शराब का एहतिमाम करना ह़राम है ख़्वाह वोह ख़ुद न भी पीता हो और जिस को मा'लूम हो कि उस दा'वत में शराब का दौर भी होगा तो उसे येह याद रखना चाहिये कि ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत صَلَّى اللهُ تعالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस दस्तरख़्वान पर बैठने से मन्अ़ फ़रमाया है जिस पर शराब पी जाए।

(سنن ابی داود، کتاب الاطعمۃ، باب ماجاء فی الجلوس علی مائدۃ علیھا بعض ما یکرہ، الحدیث: ۳۷۷۴، ج ۳، ص ۴۸۹ ملتقطا)

और ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ और क़ियामत पर ईमान रखता है, उस दस्तरख़्वान पर मत बैठे जिस पर शराब का दौर चलता है।"

(سنن ابی داود، کتاب الاطعمۃ، باب ما جاء في الجلوس علی مائدۃ علیھا بعض مایکرہ، الحدیث: ۳۷۷۴، ج ۳، ص ۴۸۹ ملتقطا)

पस जिस मह़फ़िल व पार्टी के बारे में मा'लूम हो कि उस में शराब के जाम छलकेंगे उस में हरगिज़ शिर्कत न की जाए वरना अ़ज़ाबे नार के मुस्तह़िक़ हो जाएंगे। जैसा कि सरकारे नामदार,

मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : "जो लोग दुन्या में किसी नशा करने वाले के पास जम्अ़ होते हैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन सब को आग में जम्अ़ फ़रमाएगा तो वोह एक दूसरे के पास मलामत करते हुए आएंगे, उन में से एक दूसरे से कहेगा : "**अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझे मेरी त़रफ़ से अच्छा बदला न दे तूने ही मुझे इस जगह पहुंचाया ।**" तो दूसरा भी इसी त़रह़ जवाब देगा । (کتاب الکبائر للذھبی، الکبیرۃ التاسعۃ عشرۃ: شرب الخمر، ص ۹۵)

अगर कोई पार्टी में शराब के एहतिमाम के मुतअ़ल्लिक़ येह उ़ज़्र पेश करे कि येह शराब तो उस के हां आने वाले ग़ैर मुस्लिमों के लिये है तो उसे ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى का येह क़ौल याद रखना चाहिये कि : "**काफ़िर या बच्चे को शराब पिलाना भी ह़राम है अगर्चे ब त़ौरे इलाज पिलाए और गुनाह उसी पिलाने वाले के ज़िम्मे है ।**" (الھدایۃ، کتاب الاشربۃ، ج ۲، ص ۳۹۸)

: "बा'ज़ मुसलमान अंग्रेज़ों की दा'वत करते हैं और शराब भी पिलाते हैं वोह गुनहगार हैं इस शराब नोशी का वबाल उन्ही पर है ।" (बहारे शरीअ़त, अश्रबा का बयान, जि. 3 स. 672)

शराब नोशी की मह़फ़िल

हमारे मुल्क में न्यू ईयर नाइट पर होने वाली फ़ह़्ह़ाशी व अ़य्याशी का अन्दाज़ा करने के लिये एक ख़बर का ख़ुलासा मुलाह़ज़ा फ़रमाइये : "गुज़श्ता रोज़ शदीद सर्दी के बा वुजूद नए साल के

आग़ाज़ की खुसूसी महफ़िलों का एहतिमाम हुवा। जहां नाच गाने के प्रोग्राम के इलावा जाम से जाम टकराते रहे। लाहोर में माल रोड़ और फ़ोरट्रेस स्टेडियम के अ़लाक़ों में नौजवान ना'रे बाज़ी करते रहे। दूसरी जानिब न्यू ईयर नाइट पर सूबाई दारुल हुकूमत के किसी भी अहम और ग़ैर अहम होटल में कमरा दस्तयाब न था। मुख़्तलिफ़ तन्ज़ीमों और उमरा ने अपनी खुफ़िया महफ़िलें सजाने के लिये कई रोज़ पहले ही कमरे बुक करवा लिये थे। पोलीस ने दर्जनों शराबी गिरिफ़्तार कर के इन से बोतलें बर आमद कीं।"

ऐ ख़ासए ख़ासाने रुसुल वक़्ते दुआ है
उम्मत पे तेरी आ के अ़जब वक़्त पड़ा है
फ़रियाद है ऐ किश्तिये उम्मत के निगेहबां
बेड़ा येह तबाही के क़रीब आन लगा है

अहकामे ख़ुदा वन्दी से खुली जंग

7 रमज़ानुल मुबारक 1428 हिजरी ब मुताबिक़ 21 सितम्बर 2007 बाबुल मदीना (कराची) की रेल्वे कॉलोनी के रिहाइशी चन्द नौ जवानों ने रक़्सो सुरूद की एक महफ़िल सजाने का प्रोग्राम बनाया। महफ़िल में नाच गाने के साथ शराब व कबाब का बन्दोबस्त भी था। दोस्त यार मिल कर येह तक़्रीबन 40 नौजवान थे। शाम के साए गहरे होते ही मसनूई रोशनियों ने जब कराची की इस कॉलोनी में चरागां कर दिया और चारों त़रफ़ से लोग बारगाहे इलाही में ह़ाज़िर होने के लिये मसाजिद का रुख़ करने लगे तो उन

नौजावनों ने इकट्ठे हो कर नाच गाना शुरूअ् कर दिया और साथ ही साथ शराब के जाम छलकाने लगे। इस त़रह़ उन्हों ने पूरी कॉलोनी में वोह ऊधम मचाया कि ख़ुदा की पनाह। इस दौरान चन्द नौजवान शराब के नशे में धुत हो कर लड़खड़ाए और धड़ाम से नीचे गिर गए। दूसरे नौजवानों ने उन के गिरने पर एक ज़ोरदार क़हक़हा लगाया और साथ ही शराब का दौर तेज़ कर दिया।

यूं जाम पर जाम बनते रहे, रक़्स होता रहा और नौजवान दुन्या व माफ़ीहा से बे नियाज़ इस मह़फ़िल के रंग में रंगते चले गए। रात गहरी होने के साथ साथ नौजवान शराब पीते जाते और थर थराते व कांपते हुए फ़र्श पर गिरते जाते यहां तक कि फ़र्श पर उन की ता'दाद बढ़ती चली गई। अचानक एक दोस्त ने दूसरे से पूछा : "इन सब को क्या हो गया है ? येह सब क्यूं सो गए हैं ?" दूसरे ने फटी फटी आंखों से अपने दोस्तों को फ़र्श पर पड़े देखा और उस के बा'द अपने दोस्त की त़रफ़ देखा तो दोनों मुआ़मले की नौइय्यत को भांप गए। लिहाज़ा उन्हों ने फ़ौरी त़ौर पर पुलीस को इत्तिलाअ् दी और जब पुलीस मह़फ़िल में पहुंची तो 27 नौजवान फ़र्श पर तड़प तड़प कर जान दे चुके थे जब कि जो ज़िन्दा बचे थे वोह भी बुरी त़रह़ तड़प रहे थे। पुलीस ने फ़ौरी त़ौर पर जिन्दा बच जाने वालों को हस्पताल पहुंचा दिया। यूं रेलवे कॉलोनी में रमज़ान के मुक़द्दस महीने में सजने वाली रक़्सो सुरूद की मह़फ़िल मौत की मह़फ़िल बन गई और 36 नौजवान ज़ेहरीली शराब के घाट चढ़ गए।

जो कुछ हैं वोह सब अपने ही हाथों के हैं करतूत
शिकवा है ज़माने का न क़िस्मत का गिला है
देखे हैं येह दिन अपनी ही ग़फ़्लत की बदौलत
सच है कि बुरे काम का अन्जाम बुरा है

अगर हम अपने इर्द गिर्द देखें तो येह जान कर ह़ैरत होगी कि शराब नोशी, बदकारी और फ़ह़्ह़ाशी इस मुआ़शरे का ह़िस्सा बन चुकी है। आज हमारे मुल्क का कौन सा ऐसा शहर है जिस में शराब दस्तयाब न हो जिस में लोग फ़ख़्र से अपनी बदकारी का ज़िक्र न करते हों और जिस में आप को सड़कों, बाज़ारों और दुकानों पर फ़ह़्ह़ाशी और ड़ुर्यानी दिखाई न देती हो। आप को येह जान कर ह़ैरत होगी कि हमारे मुल्क में 27 ऐसी कम्पनियां मौजूद हैं जो बैरूने मुल्क से शराब बर आमद करती हैं और मुख़्तलिफ़ शहरों में खुले आ़म फ़रोख़्त करती हैं। शराब हमारे मुआ़शरे में इस क़दर सरायत कर चुकी है कि हमारी शादी बियाह और इम्तिहान से पास होने की तक़्रीबात तक में शराब पी और पीलाई जाती है।

नाच गाना हमारी शादियों का एक लाज़िमी ह़िस्सा बन चुका है जब कि शरीफ़ से शरीफ़ घराने भी शादी बियाह की तक़्रीबात में अपनी बच्चियों को सरनंगा करने और नाचने कूदने की इजाज़त दे देते हैं। इसी का नतीजा है कि न सिर्फ़ आज हमारा

मुल्क फ़ह्हाशी के सैलाब में बह रहा है बल्कि शराब भी सरे आ़म बेची और पीने के साथ साथ पिलाई भी जाती है, लोग इस क़दर निडर और बे ख़ौफ़ हो चुके हैं कि वोह रमज़ान के बा बरकत महीने में भी शराब नोशी की महाफ़िल के क़ियाम से बाज़ नहीं आते। ज़रा ग़ौर कीजिये कि क्या येह अह़कामे ख़ुदावन्दी की खुली तौहीन नहीं ? यक़ीनन येह सरासर नाफ़रमानी और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से खुली जंग है।

वज़्अ़ में तुम हो नसारा तो तमद्दुन में हुनूद
येह मुसलमां हैं ! जिन्हें देख के शरमाएं यहूद

एक गुनाह ﴿10﴾ ऐब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बन्दा गुनाह तो एक ही करता है मगर उस नादान को येह मा'लूम नहीं कि उस का येह एक गुनाह अपने अन्दर दस ऐ़ब छुपाए हुए है। चुनान्चे, मन्क़ूल है कि एक गुनाह में दस ड़यूब होते हैं :

﴿1﴾.... जब बन्दा कोई गुनाह करता है तो उस ख़ुदाए ख़ालिक़ो बरतर को नाराज़ करता है जिस को उस पर हर वक़्त क़ुदरत ह़ासिल है।

﴿2﴾.... ऐसी ज़ात को ख़ुश करता है जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक सब से ज़ियादा ज़लील है या'नी शैत़ाने लईन और जो उस का भी दुश्मन है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का भी।

﴿3﴾.... निहायत अच्छे मक़ाम या'नी जन्नत से दूर हो जाता है।

﴿4﴾....बहुत बुरे मक़ाम या'नी दोज़ख़ के क़रीब हो जाता है।

﴾5﴿.... वोह उस नफ़्स पर ज़ुल्म करता है जो उस को सब से ज़ियादा प्यारा होता है या'नी ख़ुद अपने आप पर।

﴾6﴿.... वोह ख़ुद को नापाक कर लेता है ह़ालांकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस को पाक व साफ़ पैदा किया था।

﴾7﴿.... अपने उन साथियों को ईज़ा देने का बाइ़ष बनता है जो उस को कभी तक्लीफ़ नहीं देते या'नी वोह फ़िरिश्ते जो उस के मुह़ाफ़िज़ है।

﴾8﴿.... अपनी गुनाहगारी पर ज़मीनो आस्मान, रातो दिन और मुसलमान भाइयों को गवाह बना कर उन्हें तक्लीफ़ पहुंचाने का सबब बनता है।

﴾9﴿.... अपने गुनाह के सबब अपने आक़ा व मौला صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को तक्लीफ़ पहुंचाता है।

﴾10﴿.... तमाम मख़्लूक़ाते इलाही से ख़ियानत का मुर्तकिब होता है ख़्वाह इन्सान हो या दीगर मख़्लूक़। इन्सानों की ख़ियानत येह है कि अगर किसी मुआ़मले में उस से गवाही लेने की ज़रूरत पड़े तो उस गुनाह की वजह से उस की गवाही क़बूल न की जाएगी और दीगर मख़्लूक़ात की ख़ियानत येह है कि बन्दों के गुनाहों की वजह से तमाम मख़्लूक़ पर आस्मान से बारिश बन्द हो जाती है।

लिहाज़ा बन्दे को गुनाहों से बचना चाहिये क्यूंकि बन्दा गुनाह कर के अपनी ही जान पर ज़ुल्म करता है।

(تذکرۃ الواعظین، الباب السادس والعشرون، ص ۲۹۷ تا ۲۹۹)

ज़मीं बोझ से मेरे फटती नहीं है
येह तेरा ही तो है करम या इलाही
बड़ी कोशिशें की गुनह छोड़ने की
रहे आह ! नाकाम हम या इलाही

शराब किसे कहते हैं ?

आइये ! अब येह जानने की कोशिश करते हैं कि शराब क्या है और इस्लाम में इस के मुतअ़ल्लिक़ क्या हुक्म है ?

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 1250 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**बहारे शरीअ़त**" जिल्द सिवुम **सफ़ह़ा** 671 पर **सदरुश्शरीआ़ बदरुत्त़रीक़ा** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं कि लुग़त में पीने की चीज़ को शराब कहते हैं और इस्त़िलाहे़ फ़ुक़हा में शराब उसे कहते हैं जिस से नशा होता है, इस की बहुत क़िस्में हैं **ख़म्र**, अंगूर की शराब को कहते हैं या'नी अंगूर का कच्चा पानी जिस में जोश आ जाए और शिद्दत पैदा हो जाए। इमामे आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ के नज़्दीक येह भी ज़रूरी है कि इस में झाग पैदा हो और कभी हर शराब को मजाज़न ख़म्र कह देते हैं।

(الفتاوی الھندیۃ، کتاب الاشربۃ، الباب الاول فی تفسیر الاشربۃ......الخ، ج۵، ص۴۰۹، درمختار، کتاب الاشربۃ، ج۱۰، ص۳۲)

इमाम ह़ाफ़िज़ मुह़म्मद बिन अह़मद ज़हबी (मुतवफ़्फ़ा सि. 748 हि.) : "किताबुल कबाइर" में फ़रमाते हैं कि हर उस शै को ख़म्र कहते हैं जो अ़क़्ल को ढांप दे चाहे वोह तर हो या ख़ुश्क, खाई जाती हो या पी जाती हो। (किताबुल कबाइर, स. 92)

ख़म्र को ख़म्र कहने का सबब

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबुल अ़ब्बास अह़मद बिन मुह़म्मद बिन अ़ली बिन ह़जर मक्की शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى (मुतवफ़्फ़ा सि. 974 हि.) अपनी किताब "**अज़्ज़वाजिर अ़न इक़्तिराफ़िल कबाइर**" में फ़रमाते हैं कि ख़म्र को ख़म्र कहने की वजह येह है कि येह अ़क़्ल को ढांप या'नी छुपा लेती है। औ़रत की औढ़नी को भी ख़िमार इस लिये कहते हैं कि वोह उस के चेहरे को छुपा लेती है। नीज़ ख़ामिर उस शख़्स को कहा जाता है जो अपनी गवाही छुपा लेता है। एक क़ौल के मुत़ाबिक़ शराब को ख़म्र इस लिये कहते हैं कि येह शिद्दत इख़्तियार करने तक ढांप दी जाती है, ह़दीषे पाक के येह अल्फ़ाज़ इसी से हैं "**ख़म्मिरू आनियतकुम**" या'नी अपने बरतन ढांपो।

(صحیح البخاری، کتاب الاشربۃ، باب تغطیۃ الاناء، الحدیث: ۵۶۲۳، ج۳، ص۵۹۱، ملتقطاً)

बा'ज़ अहले लुग़त कहते हैं कि इसे ख़म्र कहने का सबब येह है कि येह अ़क़्ल को ख़ल्त़ मल्त़ कर देती है, इसी से अ़रबों का येह क़ौल है "**ख़ामरहू दाउ**" या'नी बीमारी ने इसे ख़ल्त़ मल्त़ कर दिया। (الزواجر عن اقتراف الکبائر، ج۲، ص۲۹۲)

शराब का हुक्म

हज़रते सय्यिदुना इमाम अबू नुऐम अहमद बिन अब्दुल्लाह अस्फ़हानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّورانی ने "हिल्यतुल औलिया" में नक्ल फ़रमाया है कि रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक्दस में एक मटके में जोश मारती हुई (नशा आवर) नबीज़ लाई गई तो आप صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "इसे दीवार पर दे मारो क्यूंकि येह उस शख़्स का मशरूब है जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और यौमे आख़िरत पर ईमान नहीं रखता ।"

(حلیۃ الاولیاء، ابوعمرو الاوزاعی، الحدیث:۸۱۴۸، ج۶، ص۱۵۹)

हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए उम्मत صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ह़क़ीक़त बयान है : "हर नशा आवर चीज़ शराब है और हर नशा आवर चीज़ ह़राम है ।"

(صحیح مسلم، کتاب الاشربۃ، باب بیان ان کل مسکر خمر وان کل خمر حرام، الحدیث:۲۰۰۳، ص۱۱۰۹)

और एक रिवायत में आप صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "हर नशा आवर चीज़ शराब है और हर शराब ह़राम है ।" (المرجع السابق)

शराब की कमाई का हुक्म

प्यारे इस्लामी भाइयो ! जिस त़रह़ शराब का पीना ह़राम है इसी त़रह़ इस का बेचना और इस की कमाई खाना भी ह़राम है । चुनान्चे,

शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने शराब और उस की क़ीमत (या'नी कमाई), मुर्दार और उस की कमाई, ख़िन्ज़ीर और उस की कमाई को ह़राम क़रार दिया है ।"

(سنن ابی داود، کتاب الاجارۃ، باب فی ثمن الخمر والمیتۃ، الحدیث:۳۴۸۵، ج۳، ص۳۸۶)

और एक रिवायत में है कि सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने यहूदियों पर (गुर्दों, आंतों और मे'दे की) चरबी खाना ह़राम की तो उन्हों ने उसे बेच कर उस की कमाई खाई, पस जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ किसी क़ौम पर कोई चीज़ ह़राम करता है तो उस की कमाई भी उन पर ह़राम कर देता है।”

(سنن ابی داود، کتاب الاجارۃ، باب فی ثمن الخمر والمیتۃ، الحدیث:۳۴۸۸، ج۳، ص۳۸۷ ملتقطا)

शराब ह़राम है थोड़ी हो या ज़ियादा

शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “जिस चीज़ की ज़ियादा मिक़दार नशा लाए उस की कम मिक़दार भी ह़राम है।”

(سنن ابی داود، کتاب الاشربۃ، باب النھی عن المسکر، الحدیث:۳۶۸۱، ج۳، ص۴۵۹)

ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : “जिस शै का एक फ़रक़ (सोलह रत़्ल के बराबर एक पैमाना नशा दे उस का चुल्लू भर भी ह़राम है।”

(جامع الترمذی، کتاب الاشربۃ، باب ما اسکر کثیرہ فقلیلہ حرام، الحدیث:۱۸۷۳، ج۳، ص۳۴۳ ملتقطا)

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 1157 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब “**बहारे शरीअ़त**” जिल्द सुवुम सफ़्ह़ा 672 पर सदरुश्शरीआ़, बदरुत्त़रीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी

عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि ख़म्र ह़राम बि ऐ़निही है इस की हुरमत नसे क़त़ई[1] से षाबित है और इस की हुरमत पर तमाम मुसलमानों का इजमाअ़ है इस का क़लील व कषीर सब ह़राम है और येह पेशाब की त़रह़ नजिस है और इस की नजासत ग़लीज़ा है जो इस को ह़लाल बताए काफ़िर है कि नसे क़ुरआनी का मुन्किर है मुस्लिम के ह़क़ में येह मुतक़व्विम नहीं या'नी अगर किसी ने मुसलमान की येह शराब तलफ़ (ज़ाएअ़) कर दी तो उस पर ज़मान नहीं और इस को ख़रीदना सह़ीह़ नहीं इस से किसी क़िस्म का इन्तिफ़ाअ़ (नफ़्अ़ उठाना) जाइज़ नहीं। न दवा के त़ौर पर इस्ति'माल कर सकता है न जानवर को पिला सकता है न इस से मिट्टी भिगो सकता है न हुक़्ना[2] के काम में लाई जा सकती है, इस के पीने वाले को ह़द मारी जाएगी अगर्चे नशा न हुवा हो। (الدرالمختار، کتاب الاشربۃ، ج۱۰،ص ۳۳،وغیرہ)

जानवरों के ज़ख़्म में भी बत़ौरे इलाज इस को नहीं लगा सकते। (الفتاوی الھندیۃ، کتاب الاشربۃ، الباب الاول فی تفسیرہ......إلخ، ج۵،ص ۴۱۰)

शीरए अंगूर को पकाया यहां तक कि दो तिहाई से कम जल गया या'नी एक तिहाई से ज़ियादा बाक़ी है और इस में नशा हो येह भी ह़राम और नजिस है। (الدرالمختار، کتاب الاشربۃ، ج۱۰،ص ۳۶)

रत़ब या'नी तर खजूर का पानी और मुनक़्क़े को पानी में भिगोया गया, जब येह पानी तेज़ हो जाए और झाग फेंके येह भी ह़राम नजिस हैं। (المرجع السابق، ص ۳۷)

शहद, अन्जीर, गेहूं, जव वग़ैरा की शराबें भी ह़राम हैं। (الدر المختار، کتاب الاشربۃ، ج۱۰، ص ۳۹،۴۰)

---

[1]....नसे क़त़ई से मुराद वोह दलील है जो क़ुरआने पाक या ह़दीषे मुतवातरा से षाबित हो। (فتاوی فقیہ ملت، ج۱، ص ۲۰۴)

[2]....किसी दवा की बत्ती या पिचकारी मक़्अ़द में चढ़ाना।

मषलन यहां हिन्दूस्तान में महवे (एक दरख़्त जिस के पत्ते सुर्ख़, ज़र्दी माइल, ख़ुश्बूदार और फल गोल छूहारे की मानिन्द होता है) की शराब बनती है जब इन में नशा हो ह़राम हैं।

(बहारे शरीअ़त, अश्रबा का बयान, जि. 3 स. 672)

ख़म्र (शराब) के मुतअ़ल्लिक़ आठ अह़काम

मुल्ला अह़मद जीवन ह़नफ़ी رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَيْه ने **"तफ़्सीराते अह़मदिया"** में ख़म्र (शराब) के बारे में आठ अह़काम ज़िक्र किये हैं। जो येह हैं :

(1).....हमारे नज़्दीक ख़म्र (शराब) बि ऐ़निही ह़राम है। इस की ह़ुरमत नशे पर मौक़ूफ़ है न नशा इस के ह़राम होने की इ़ल्लत है। बा'ज़ लोगों का ख़याल है कि इस का नशा ह़राम है क्यूंकि येही फ़साद का बाइ़ष बनता है और **अल्लाह** की याद और नमाज़ से रोकता है। येह ख़याल हमारे नज़्दीक कुफ़्र है क्यूंकि येह **किताबुल्लाह** का इन्कार है **अल्लाह** तआ़ला ने ख़म्र (शराब) को **रिज्स** कहा है और **रिज्स** ह़राम **लि ऐ़निही** होता है इसी पर उम्मत का इजमाअ़ है और सुन्नत से भी येही षाबित है। लिहाज़ा ख़म्र (शराब) ह़राम **लि ऐ़निही** है।

(2).....ख़म्र (शराब) पेशाब की त़रह़ नजासते ग़लीज़ा है क्यूंकि येह दलीले क़त़ई से षाबित है।

(3).....मुसलमान के लिये इस की कोई क़ीमत नहीं या'नी अगर कोई शख़्स किसी मुसलमान की शराब ज़ाएअ़ कर दे या ग़ज़ब कर ले तो इस पर कोई ज़मान नहीं, इस की ख़रीदो

फ़रोख़्त जाइज़ नहीं क्यूंकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इहानत की वजह से इसे नजिस क़रार दिया है लिहाज़ा इस की क़ीमत लगाना गोया इसे इ़ज़्ज़त देना और इहानत से निकालना है अगर्चे सह़ीह़ क़ौल के मुत़ाबिक़ येह भी माल है।

﴾4﴿.....ख़म्र (शराब) से नफ़्अ़ उठाना ह़राम है क्यूंकि येह नजिस है और नजिस शै से नफ़्अ़ ह़राम होता है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने भी इस से इजतिनाब का हुक्म दिया है।

﴾5﴿.....ख़म्र (शराब) को ह़लाल जानना कुफ़्र है क्यूंकि येह दलीले क़त़ई का इन्कार है।

﴾6﴿ ..... ख़म्र (शराब) पीने वाले पर ह़द जारी होगी ख़्वाह उसे नशा न भी हो।

﴾7﴿.....ख़म्र (शराब) बनने के बा'द मज़ीद पकाने से इस में फ़र्क़ नहीं पड़ता या'नी येह ब दस्तूर ह़राम ही रहती है।

﴾8﴿..... अलबत्ता ! हमारे (अह़नाफ़) के नज़्दीक इसे सिर्के में तब्दील करना जाइज़ है।

(التفسیرات الاحمدیۃ،المائدۃ،مسئلۃ حرمۃ الخمر والمیسر، ص ۳۶۹)

ह़ुरमते शराब पर अ़ल्लामा शामी के दस दलाइल

अ़ल्लामा शामी ह़नफ़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ ने शराब की ह़ुरमत पर दस दलाइल ज़िक्र किये हैं। जो येह हैं :

﴾1﴿..... शराब का ज़िक्र जूए, बुत और जूए के तीरों के साथ किया है और येह सब ह़राम हैं।

﴾2﴿..... शराब को नापाक फ़रमाया और नापाक चीज़ ह़राम होती है।

﴾3﴿.....शराब को अ़मले शैत़ान फ़रमाया और शैत़ानी अ़मल ह़राम है।

﴾4﴿..... शराब से बचने का हुक्म दिया और जिस से बचना फ़र्ज़ हुवा उस का इर्तिकाब ह़राम होता है।

﴾5﴿.....फ़लाह़ (कामयाबी) को शराब से बचने के साथ मशरूत़ ठहराया। इस लिये इजतिनाब फ़र्ज़ और इर्तिकाब ह़राम हुवा।

﴾6﴿.....शराब के सबब से शैत़ान आपस में अ़दावत (दुश्मनी) डालता है और अ़दावत ह़राम है और जो ह़राम का सबब हो वोह भी ह़राम ही है।

﴾7﴿.....शराब के सबब से शैत़ान बुग़्ज़ (नफ़रत) डालता है और बुग़्ज़ ह़राम है।

﴾8﴿.....शराब के सबब शैत़ान **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र से रोकता है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र से रोकना ह़राम है।

﴾9﴿.....शराब के सबब शैत़ान नमाज़ से रोकता है और जो नमाज़ से रुकावट का सबब हो उस का इर्तिकाब ह़राम।

﴾10﴿.....**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इस्तिफ़हामिया (सुवालिया) अन्दाज़ में शराब से मन्अ़ फ़रमाया कि क्या तुम बाज़ आने वाले नहीं हो, इस से भी हुर्मत का पता चलता है।

(ردالمحتار،کتاب الاشربۃ،ج ١٠،ص ٣٣)

शराब कब ह़राम हुई ?

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى **"ख़ज़ाइनुल इरफ़ान"** में फ़रमाते हैं कि शराब तीन हिजरी में ग़ज़्वए अह़ज़ाब से चन्द रोज़ बा'द ह़राम की गई ।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पा. 2 अल बक़रह, तह़्तुल आयत, 219)

"शराब" के मुतअ़ल्लिक़ नाज़िल होने वाली 4 आयाते मुबारका

ज़मानए जाहिलिय्यत में शराब आ़म थी, मज़्हबी या मुआ़शरती त़ौर पर इसे बुरा नहीं समझा जाता था, इस लिये अकषर लोग इस के आ़दी थे, इस्लाम ने तदरीजन शराब की बुराई को बयान किया और आख़िरे कार इस के ह़राम होने का हुक्म नाज़िल हुवा । चुनान्चे,

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ 1012 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **"जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल"** जिल्द दुवुम सफ़ह़ा 545 ता 547 पर है : "उ-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं कि शराब की ह़ुरमत के मुतअ़ल्लिक़ 4 आयात नाज़िल हुईं । पहले इरशाद फ़रमाया :

وَمِنۡ ثَمَرٰتِ النَّخِيۡلِ وَالۡاَعۡنَابِ تَتَّخِذُوۡنَ مِنۡهُ سَكَرًا وَّ رِزۡقًا حَسَنًا ؕ اِنَّ فِىۡ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوۡمٍ يَّعۡقِلُوۡنَ ﴿۶۷﴾ (پ۱۴، النحل:۶۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और खजूर और अंगूर के फलों में से कि इस से नबीज़ बनाते हो और अच्छा रिज़्क़, बेशक इस में निशानी है अ़क़्ल वालों को ।*

मुसलमान फिर भी शराब पीते रहे इस लिये कि येह इन के लिये ह़लाल थी फिर अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ और ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ वग़ैरा जैसे सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِین ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسلَّم हमें शराब के बारे में फ़तवा दीजिये क्यूंकि येह अ़क़्ल को ख़त्म करने वाली और माल को ज़ाएअ़ करने वाली है।" तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का येह हुक्म नाज़िल हुवा :

یَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْخَمْرِ وَ الْمَیْسِرِؕ قُلْ فِیْهِمَاۤ اِثْمٌ كَبِیْرٌ وَّ مَنَافِعُ لِلنَّاسِ٘ وَ اِثْمُهُمَاۤ اَكْبَرُ مِنْ نَّفْعِهِمَاؕ (پ۲، البقرۃ:۲۱۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तुम से शराब और जूए का हुक्म पूछते हैं, तुम फ़रमा दो कि इन दोनों में बड़ा गुनाह है और लोगों के कुछ दुन्यवी नफ़्अ़ भी और उन का गुनाह उन के नफ़्अ़ से बड़ा है।*

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ शराब की हुरमत की त़रफ़ तवज्जोह दिला रहा है, लिहाज़ा जिस के पास शराब हो तो उसे बेच दे।"

(صحیح مسلم، کتاب المساقاۃ والمزارعۃ، باب تحریم بیع الخمر، الحدیث:۱۵۷۸، ص۸۵۱ ملتقطاً)

कुछ लोगों ने इस फ़रमान "اِثْمٌ كَبِیْرٌ" (बड़ा गुनाह है) की वजह से शराब छोड़ दी और कुछ इस फ़रमान "مَنَافِعُ لِلنَّاسِ" (लोगों के कुछ दुन्यवी नफ़्अ़ भी) की वजह से पीते रहे यहां तक कि एक बार ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ ने

खाना तय्यार कर के कुछ सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को दा'वत दी और उन्हें शराब भी पेश की, उन्हों ने शराब पी तो होश में न रहे, नमाज़े मग़रिब का वक़्त हुवा तो उन में से एक सहाबी नमाज़ पढ़ाने के लिये आगे बढ़े और उन्हों ने इन आयाते मुबारका ﴿قُلْ يٰٓاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَۙ ۝ لَآ اَعْبُدُ مَا تَعْبُدُوْنَۙ ۝﴾ (پ۳۰، الکافرون:۲،۱)(1) में لَآ اَعْبُدُ के बजाए اَعْبُدُ पढ़ा (या'नी اَعْبُدُ से पहले हर्फ़े لَا को छोड़ दिया) तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने येह आयते मुबारका नाज़िल फ़रमाई :

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَقْرَبُوا الصَّلٰوةَ وَ اَنْتُمْ سُكٰرٰى حَتّٰى تَعْلَمُوْا مَا تَقُوْلُوْنَ (پ۵، النساء:۴۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ऐ ईमान वालो नशे की ह़ालत में नमाज़ के पास न जाओ जब तक इतना होश न हो कि जो कहो उसे समझो ।*

पस नमाज़ के अवक़ात में नशा ह़राम हो गया और जब येह आयते मुबारका नाज़िल हुई तो कुछ लोगों ने अपने ऊपर शराब को ह़राम कर ली और कहा : "उस चीज़ में कोई भलाई नहीं जो हमारे और नमाज़ के दरमियान ह़ाइल हो जाए" और कुछ लोगों ने सिर्फ़ नमाज़ के अवक़ात में शराब पीना छोड़ी, इन में से कोई शख़्स नमाज़े इशा के बा'द शराब पीता तो सुब्ह़ तक उस का नशा ज़ाइल हो चुका होता और फ़ज्र की नमाज़ के बा'द शराब पीता तो ज़ोहर के वक़्त तक होश में आ जाता ।

---

(1)..... **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** *तुम फ़रमाओ ! ऐ काफ़िरों न मैं पूजता हूं जो तुम पूजते हो ।*

एक बार ह़ज़रते सय्यिदुना इतबान बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने मुसलमानों को दा'वत दी और खाने में उन्हों ने उन के लिये ऊंट का सर भूना, सब ने मिल कर उसे खाया और शराब भी पी यहां तक कि उन पर नशा त़ारी हो गया, फिर आपस में फ़ख़्र करने और बुरा भला कहने लगे और अश्आ़र पढ़ने लगे फिर किसी ने एक ऐसा क़सीदा पढ़ा जिस में अन्सार की हिजू थी और उस की क़ौम के लिये फ़ख़्र था तो एक अन्सारी ने ऊंट के जबड़े की हड्डी ली और एक सह़ाबी के सर पर दे मारी, वोह शदीद ज़ख़्मी हो गए और सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हो कर उस अन्सारी की शिकायत की तो अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने बारगाहे रब्बुल इ़ज़्ज़त में अ़र्ज़ की : "या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें शराब के मुतअ़ल्लिक़ वाज़ेह़ हुक्म अ़त़ा फ़रमा।" पस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने येह हुक्म नाज़िल फ़रमाया :

يٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْۤا اِنَّمَا الْخَمْرُ وَ الْمَیْسِرُ وَ الْاَنْصَابُ وَ الْاَزْلَامُ رِجْسٌ مِّنْ عَمَلِ الشَّیْطٰنِ فَاجْتَنِبُوْهُ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ(۹۰) اِنَّمَا یُرِیْدُ الشَّیْطٰنُ اَنْ یُّوْقِعَ بَیْنَكُمُ الْعَدَاوَةَ وَ الْبَغْضَآءَ فِی الْخَمْرِ وَ الْمَیْسِرِ وَ یَصُدَّكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ وَ عَنِ الصَّلٰوةِ فَهَلْ اَنْتُمْ مُّنْتَهُوْنَ(۹۱)

(پ۷، المائدۃ:۹۰، ۹۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ऐ ईमान वालो ! शराब और जुआ और बुत और पांसे नापाक ही हैं शैत़ानी काम तो इन से बचते रहना कि तुम फ़लाह़ पाओ, शैत़ान येही चाहता है कि तुम में बैर और दुश्मनी डलवा दे शराब और जूए में और तुम्हें **अल्लाह** की याद और नमाज़ से रोके तो क्या तुम बाज़ आए ।*

येह हुक्म ग़ज़्वए अह़ज़ाब के कुछ दिन बा'द नाज़िल हुवा तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ की : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हम इस से रुक गए ।" (معالم التنزیل للبغوی، البقرۃ، تحت الآیۃ:۲۱۹، ج۱، ص۱۴۰)

ब तदरीज हुरमत में ह़िक्मत

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی नक़्ल फ़रमाते हैं कि : "इस तरतीब पर हुरमत वाक़ेअ़ करने में ह़िक्मत येह थी कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जानता था येह लोग शराब नोशी के बहुत दिलदादह हैं और इन्हें इस से बहुत ज़ियादा नफ़्अ़ भी ह़ासिल होता है, अगर इन्हें एक ही हुक्म से मन्अ़ किया गया तो येह इन पर गिरां गुज़रेगा, लिहाज़ा इन पर शफ़्क़त फ़रमाते हुए दर्जा ब दर्जा हुरमत नाज़िल फ़रमाई ।"

(التفسیر الکبیر، البقرۃ، تحت الآیۃ:۲۱۹، ج۲، ص۳۹۶)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! शराब के ब तदरीज ह़राम होने से मा'लूम हुवा कि सब से पहले सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को पाकी व त़हारत का दर्स दिया गया ताकि शराब के मफ़ासिद और नुक़्सानात का एह़सास ख़ुद ब ख़ुद इन के दिलों में पैदा हो और वोह इस से नफ़रत करने लगें और जब चन्द ऐसे वाक़िआ़त रू नुमा हुए जिन का सबब शराब बनी तो इस की ख़राबी का एह़सास हर दिल में होने लगा और आख़िर इस के ह़राम होने का क़त़्ई हुक्म नाज़िल हुवा ।

सरकार की पसन्द

शबे मे'राज **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में दो प्याले पेश किये गए एक में दूध और दूसरे में शराब थी। फिर इख़्तियार दिया गया कि इन में से कोई एक पसन्द फ़रमा लें, पस सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने दूध पसन्द फ़रमाया तो अ़र्ज़ की गई : "आप صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़ित़रत को पसन्द किया है क्यूंकि अगर आप صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم शराब पसन्द फ़रमाते तो आप صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की उम्मत गुमराही का शिकार हो जाती।"

(صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب ال إسراء برسول ا للہ صلی ا للہ علیہ وسلم إلی السموات وفرض لصلوات، الحدیث:۱۶۹، ص ۱۰۴ مختصراً۔ صحیح البخاری، کتاب احادیث الانبیاء، باب قول اللہ تعالی ۔۔۔ لخ، الحدیث:۳۳۹۴، ج۲، ص۴۳۷)

आ'ला ह़ज़रत के वालिदे माजिद मौलाना नक़ी अ़ली ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُالرَّحْمٰن के शराब के मुतअ़ल्लिक़ इ़ब्रत अंगेज़ मदनी फूल

आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ "اَلْکَلَامُ الْاَوْضَحُ فِیْ تَفْسِیْرِ سُوْرَۃِ اَلَمْ نَشْرَحْ" मा'रूफ़ बेह : "**अन्वारे जमाले मुस्त़फ़ा**" में फ़रमाते हैं : "शराब मूरिषे (बाइ़षे) ग़फ़्लत है और ग़फ़्लत मनशाए ज़लालत है। **अकषर देखा गया है कि शराबी का जिधर मुंह उठता है चला जाता है तो जिसे नशे में राहे ज़ाहिर नज़र नहीं आती राहे बात़िन कब नज़र आएगी?** और अगर ज़लालत से मह़ब्बते दुन्या मुराद

लें तो इस की मुनासबत शराब से निहायत ज़ाहिर है कि जिस त़रह़ शराब आदमी को मदहोश करती है इसी त़रह़ मह़ब्बते दुन्या इन्सान को खुदा से ग़ाफ़िल और फ़िक्रे आख़िरत से मुअ़त्त़ल कर देती है और जिस त़रह़ इस की ज़ियादती से सर घूमता व चकराता है इसी त़रह़ जो शख़्स दुन्या में ज़ियादा मुलव्विष होता है हमेशा सर गर्दां रहता है और जिस त़रह़ शराब की निस्बत वारिद है कि शराब सब बुराइयों की कुन्जी है इसी त़रह़ मह़ब्बते दुन्या के लिये आया कि वोह भी हर गुनाह का मबदा (अस्ल) है।"

शराब हम शक्ले सराब(1) है जिस त़रह़ आदमी सराब के पास पहुंच कर अपनी जहालत पर मुतनब्बेह होता है इसी त़रह़ शराबी जब शराब पी कर बहकता है तो लोग उस पर हंसते हैं, जब होश में आता है तो अपनी ह़माक़त पर नादिम होता है।

शराब और सराब में फ़र्क़

शराब और सराब के अल्फ़ाज़ में तीन नुक़्तों का फ़र्क़ है जो इब्रत के तीन मदनी फूलों की त़रफ़ इशारा कर रहे हैं।

﴾1﴿..... सराब की नदामत कुछ लम्ह़ों की होती है जब कि शराब की नदामत तीनों आ़लम में बाक़ी रहती है या'नी शराबी दुन्या में बे ए'तिबार, बरज़ख़ में ज़लिलो ख़्वार और क़ियामत के दिन अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार होगा।

(1).....सह़रा में चमकने वाली रैत जिस से पानी का धोका होता है।

﴾2﴿..... लफ़्ज़े "**शराब**" दो लफ़्ज़ों से मिल कर बना है शर (या'नी सरासर बुराई) और आब (या'नी पानी)। पस शराब एक ऐसा बुरा पानी है जिस में शर ही शर है और शर का अन्जाम हमेशा बदतर होता है।

﴾3﴿.....अ़रबी में शराब को **ख़म्र** कहते हैं। : "**ख़ा**" से मुराद **ख़ुब्ष**, : "**मीम**" से मुराद : "**मुक़ीत**" (काबिले नफ़रत) और : "**रा**" से मुराद **रद** है। गोया इस तरकीब से शराबी **ख़बीष, दुश्मने ख़ुदा** और मरदूद है। सच है शराब **उम्मुल ख़बाइष** है जो इस को पीता है मक़्हूरो **मरदूद** हो जाता है। (अन्वारे जमाले मुस्त़फ़ा, स. 280)

शराब का नफ़ाज़

जिन लोगों के रगो पे में शराब पानी की त़रह़ दौड़ा करती थी जब उन्हें येह मा'लूम हुवा कि इसे पीना **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की नाराज़ी मौल लेना है तो उन्हों ने इसे गलियों में पानी की त़रह़ बहाया कि कई दिनों तक इस की बू आती रही मगर किसी ने शराब पीने की जुरअत न की बल्कि एक रिवायत में है कि सराकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने मदीनए मुनव्वरा के तमाम लोगों की शराब को एक जगह जम्अ़ फ़रमाया और उसे अपने दस्ते अक़्दस से बहा दिया। चुनान्चे,

हज़रते **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْھُمَا से मन्क़ूल है कि एक बार मैं मस्जिद में महबूबे रब्बे दावर, शफ़ीए रोज़े महशर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में हाज़िर था, अचानक आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जिस के पास जिस क़दर शराब हो मेरे पास ले आए।" पस येह सुनना था कि सब सहाबए किराम عَلَیْھِمُ الرِّضْوَان घरों को चल दिये और जिस क़दर शराब उन के पास थी ला कर बारगाहे नबुव्वत में पेश कर दी, कोई मटका ले कर आ रहा था तो कोई शराब से भरा हुवा मश्कीज़ा। **अल ग़रज़** जिस के पास जो कुछ था ले आया, जब सब आ गए तो आप ने इरशाद फ़रमाया : "इस सारी शराब को मैदाने बक़ीअ़ में जम्अ़ कर दो, जब जम्अ़ हो जाए तो मुझे बताना।" इस हुक्म पर भी फ़ौरन अ़मल हुवा और फिर सरकार बक़ीए ग़रक़द की जानिब तशरीफ़ ले जाने लगे तो मैं भी आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के हमराह हो लिया, रास्ते में अमीरुल मोअमिनीन हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ मिल गए तो सरकारे अबद क़रार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन्हें मेरी जगह ले लिया और मुझे बाईं त़रफ़ कर दिया फिर कुछ आगे जा कर हज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ भी मिल गए तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे पीछे कर के उन्हें अपने बाईं त़रफ़ ले लिया। यूं जब हम सब उस जगह पहुंचे जहां शराब जम्अ़ की गई थी तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने लोगों से पूछा : "क्या तुम सब जानते हो कि येह क्या है ?" सब ने अ़र्ज़ की : "जी हां ! **या रसूलल्लाह**

हमें मा'लूम है कि येह शराब है।" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "तुम ने सच कहा (मगर याद रखो कि) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **ने शराब पर, इस के निचोड़ने वाले और जिस के लिये निचोड़ी जाए उस पर, पीने वाले और पिलाने वाले पर, लाने वाले और जिस के लिये लाई जाए उस पर, बेचने व ख़रीदने वाले पर और इस की क़ीमत खाने वाले तमाम अफ़राद पर ला'नत फ़रमाई है।"** फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक छुरी मंगवाई और उसे तेज़ करने का हुक्म दिया, जब छुरी तेज़ हो गई तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم उस से शराब के मश्कीज़ों को फाड़ने लगे, लोगों ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم अगर सिर्फ़ शराब बहा दी जाए और मश्कीज़ों को फाड़ा न जाए तो ज़ियादा बेहतर है क्यूंकि येह मश्कीज़े बा'द में भी फ़ाइदा दे सकते हैं तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "येह बात मैं भी अच्छी तरह जानता हूं मगर मैं ऐसा ग़ज़बे इलाही की वजह से कर रहा हूं क्यूंकि इन मश्कीज़ों से नफ़्अ़ उठाने में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी का अन्देशा है।" हज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का जलाल देख कर अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم आप मुझे हुक्म फ़रमाएं इस के लिये मैं ही काफ़ी हूं।" मगर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "नहीं ! मैं ख़ुद ही येह काम करूंगा।"

(المستدرک، کتاب الاشربۃ، باب حرمت الخمر وجعلت عدا للشرک، الحدیث: ۷۳۱۰، ج۵، ص۱۹۹ تا ۲۰۰ بتغیر)

सरकारे नामदार, मदीने का ताजदार صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के ख़ुद छुरी ले कर मश्कीज़े फाड़ने के अ़मल से मा'लूम हुवा कि आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने सख़्त नापसन्दीदगी का इज़्हार करने के लिये येह काम ख़ुद किया यहां तक कि ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की दरख़्वास्त पर भी इस काम को उन के ह़वाले न फ़रमाया।

सह़ाबए किराम का अ़मल

सह़ाबए किराम عَلَیْھِمُ الرِّضْوَان का तअ़ल्लुक़ जिस ख़ित़्ते से था वहां के रहने वालों के मुतअ़ल्लिक़ ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि जब शराब को ह़राम क़रार दिया गया तो उन दिनों अहले अ़रब के लिये इस से ज़ियादा ऐ़श वाली कोई चीज़ न थी और न ही उन के लिये किसी चीज़ की ह़ुरमत इस से सख़्त थी। (معالم التنزیل للبغوی، البقرۃ، تحت الآیۃ ۲۱۹، ج۱، ص۱۴۰)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! सह़ाबए किराम عَلَیْھِمُ الرِّضْوَان में से कई ऐसे भी थे जो इस्लाम क़बूल करने से पहले भी शराब के नुक़्सानात और इस की ख़राबियों की वजह से इसे पीना पसन्द न करते थे। चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ाफ़िज़ शहाबुद्दीन अह़मद बिन अ़ली बिन ह़जर अ़स्क़लानी शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی (मुतवफ़्फ़ा सि. 852 हि.) फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का शुमार उन लोगों में होता है जो ज़मानए जाहिलिय्यत में भी शराब को ह़राम जानते थे।

(الاصابۃ فی تمییز الصحابۃ، الرقم ۵۱۹۵ عبد الرحمن بن عوف، ج۴، ص۲۹۳)

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास बिन मिरदास رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنۃ के मुतअ़ल्लिक़ मरवी है कि ज़मानए जाहिलिय्यत में इन से पूछा गया : "आप शराब क्यूं नहीं पीते ह़ालांकि येह तो जिस्म की ह़रारत में इज़ाफ़ा करती है?" तो इन्हों ने जवाब दिया : "मैं न तो अपनी जहालत को खुद अपने हाथ से पकड़ने वाला हूं कि इसे अपने पेट में दाखि़ल करूं और न ही इस बात को पसन्द करता हूं कि अपनी क़ौम के सरदार की हैषिय्यत से सुब्ह़ करूं मगर मेरी शाम बे वुक़ूफ़ शख़्स जैसी हो।" (التفسیر الکبیر،البقرۃ،تحت الآیۃ:۲۱۹،ج۲،ص۴۰۱)

जब शराब को ह़राम क़रार दिया गया उस वक़्त तक सब सह़ाबए किराम عَلَیۡھِمُ الرِّضۡوَان के क़ल्बो रूह़ में ता'लीमाते इस्लामिया इस क़दर रच बस चुकी थीं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के हर हुक्म के सामने सरे तस्लीम ख़म करना उन की आ़दत और फ़ित़रत में शामिल हो चुका था। चुनान्चे,

हज़रते बुरैदा رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۃ फ़रमाते हैं कि हम तीन चार दोस्त मिल कर शराब पी रहे थे कि अचानक मैं उठा और बारगाहे नबुव्वत में ह़ाज़िर हो कर सलाम किया तो मा'लूम हुवा कि शराब की हुरमत का हुक्म नाज़िल हो चुका है। मैं फ़ौरन अपने दोस्तों के पास आया और उन्हें शराब की हुरमत वाली आयाते मुबारका सुनाई, वोह उस वक़्त भी शराब पीने में मसरूफ़ थे और बरतन

उन के हाथों में थे। (या'नी बरतन में मौजूद कुछ शराब पी चुके थे और कुछ अभी बाक़ी थी) मगर जब उन्हें मा'लूम हुवा कि शराब ह़राम हो गई है तो सब ने एक साथ येही कहा اِنْتَهَيْنَا رَبَّنَا! اِنْتَهَيْنَا رَبَّنَا! या'नी ऐ हमारे पाक परवर दगार ! हम ने तेरा हुक्म सुन कर शराब पीना छोड़ दी है।

(تفسیر الطبری، المائدۃ، تحت الایۃ: ۹۱، الحدیث: ۱۲۵۲۷، ج۵، ص۳۶ مفهوما)

ऐसी ही एक रिवायत ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से भी मरवी है। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : "हमारे पास आग के बिग़ैर कच्ची खजूरों की बनी हुई शराब थी, मैं फ़ुलां फ़ुलां को शराब पिला रहा था कि एक शख़्स आया और बताया कि शराब ह़राम हो गई है, तो उन सब ने मुझ से कहा : "ऐ अनस ! इन मटकों को उंडेल दीजिये।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मा'लूम होने के बा'द सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने इस के मुतअ़ल्लिक़ किसी से कुछ न पूछा और न ही शराब की त़रफ़ दोबारा देखा।"

(صحیح البخاری، کتاب التفسیر، تفسیر سورۃ المائدۃ، باب اِنَّمَا الْخَمْرُ وَالْمَیْسِرُ ...... الخ، الحدیث: ۴۶۱۷، ج۳، ص۲۱۶)

मह़ब्बत में अपनी गुमा या इलाही
न पाऊं मैं अपना पता या इलाही
रहूं मस्तो बे ख़ुद मैं तेरी विला में
पिला जाम ऐसा पिला या इलाही

मुस्लिम व ग़ैर मुस्लिम में फ़र्क़

सह़ाबए किराम عَلَیۡهِمُ الرِّضۡوَان के इस जज़्बे पर हज़ारों जानें कुरबान ! जिस शै के मुतअ़ल्लिक़ मा'लूम हुवा कि उसे पीने से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم नाराज़ हो जाएंगे तो उसे हमेशा के लिये ख़ुद से दूर कर दिया। येह इस्लाम के मानने वालों का ही तुर्रए इमतियाज़ है कि जब इन के आक़ा व मौला सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم किसी शै से मन्अ़ फ़रमा देते हैं तो फिर नज़र उठा कर कभी भी उस शै की त़रफ़ नहीं देखते क्यूंकि इन का ईमान है कि रब्बे ज़ुल जलाल और उस के रसूले बे मिषाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का हर हुक्म सरापा रह़मत व फ़ज़्ल है। बा'ज़ अमरीकी डॉक्टरों और दानिश्वरों ने इस्लाम में शराब की हुरमत के बारे में त़हक़ीक़ की तो वोह शराब के नुक़्सानात जान कर ह़ैरान रह गए और उन्हों ने ठान लिया कि वोह भी तन मन धन से अपनी क़ौम को शराब की ला'नत से छुटकारा दिलाने की कोशिश करेंगे और इस त़रह़ अमरीका व यूरोप में चौदह बरस तक शराब के ख़िलाफ़ एक भर पूर जंग जारी रही, इस के लिये नशरो इशाअ़त के तमाम जदीद तरीन वसाइल इख़्तियार किये गए। ताकि लोगों के दिलों में शराब से नफ़रत पैदा की जाए यहां तक कि इस मुहिम्म पर एक क़ौल के मुत़ाबिक़ छे करोड़ डॉलर ख़र्च किये गए, पच्चीस करोड़ पॉन्ड का ख़सारा हुकूमत को बरदाश्त करना पड़ा, तीन सो अफ़राद को तख़्तएदार पर

लटकाया गया, पांच लाख से ज़ाइद अफ़राद को क़ैदो बन्द की सज़ाएं दी गईं, भारी जुर्माने किये गए, बड़ी बड़ी जाईदादें ज़ब्त की गईं मगर कोई तदबीर कारगर न हुई और आख़िरेकार हुकूमत को हार माननी पड़ी और सि. 1933 ई. में शराब को क़ानूनी तौर पर दुरुस्त क़रार दे दिया गया।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! येह है मुस्लिम व ग़ैर मुस्लिम में बुन्यादी फ़र्क़, मुसलमानों को हुक्मे ख़ुदावन्दी मा'लूम हुवा तो उन्हों ने शराब के जाम भी तोड़ डाले जो अभी आधे पिये थे और आधे हाथों में थे और इधर ग़ैर मुस्लिमों ने अपनी क़ौम को शराब की नुहूसत से नजात दिलाने के लिये क्या कुछ न किया मगर नतीजा बे सूद निकला।

शराब के नुक़्सानात

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! शराब अन गिनत जिस्मानी व रूहानी अमराज़ का सबब है, इस से कई अख़्लाक़ी, मआ़शी और मुआ़शरती ख़राबियां जनम लेती हैं। चुनान्चे,

शराब के मआ़शी नुक़्सानात

दौरे जदीद में बरत़ानिया जैसे मुल्क को शराब की वजह से जो सालाना माली ख़सारा बरदाश्त करना पड़ता है इस के मुतअ़ल्लिक़ बरत़ानवी हुकूमत की येह रिपोर्ट पढ़िये :

बरत़ानिया में हुकूमत की रिपोर्ट के मुत़ाबिक़ हद से ज़ियादा शराब पीने का शौक़ हुकूमत को सालाना बीस अरब पाऊन्ड में पड़ता

है। वज़ीरे आ'ज़म के हुकूमते अ़मली बनाने वाले यूनिट के तजज़िये के मुत़ाबिक़ शराब की वजह से लोगों के काम पर न आ सकने या सह़ीह़ तरह़ काम न कर सकने की वजह से सालाना हज़ारों घन्टे ज़ाएअ़ होते हैं। लोगों की नस्लें शराब के समुन्दर में घुल रही हैं। अरबों पाऊन्ड, शराब की वजह से होने वाले जराइम और इस की वजह से पैदा होने वाले मुआ़शी मसाइल से निमटने में ख़र्च होते हैं। **सालाना बाईस हज़ार अफ़राद शराब की वजह से मौत का शिकार हो जाते हैं।**

रिपोर्ट तय्यार करने वालों के मुत़ाबिक़ ह़द से ज़ियादा शराब नोशी से होने वाला नुक़्सान शायद इन के अन्दाज़े से भी ज़ियादा हो। शराब नोशी की वजह से सालाना तशद्दुद के बारह लाख वाक़िआ़त होते हैं। हस्पतालों में ह़ादिषात और ईमरजन्सी के शो'बों में आने वाले **चालीस फ़ीसद मरीज़ शराब नोशी** का शिकार होते हैं जब कि आधी रात से ले कर **सुब्ह़ पांच बजे तक येह शरह़ सत्तर फ़ीसद** तक जा पहुंचती है। मुल्क में तेरह लाख बच्चों की शख़्सिय्यत पर शराबी वालिदैन की वजह से मन्फ़ी अषर पड़ता है और ऐसे बच्चे ख़ुद भी आगे चल कर मुश्किलात का शिकार होते हैं। रिपोर्ट से पता चलता है कि तीन में से एक मर्द जब कि पांच में से एक औ़रत ह़द से ज़ियादा शराब पीती है। इस

के इलावा नौजवानों में भी शराब नोशी की कषरत का रुजह़ान बढ़ रहा है। **शुग़ल के त़ौर पर शराब पीने की ऊ़म्र सोलह साल से ले कर चौबीस साल तक** पहुंच गई है। बरत़ानवी वुज़रा शराब नोशी के मस्अले के ह़ल के लिये लाइह़ा अ़मल तय्यार करने की कोशिश कर रहे हैं।

शराब के तिब्बी नुक़्सानात

एक रिपोर्ट के मुत़ाबिक़ तीस साल से आल्कोह़ोल से मुतअष्षिर मरीज़ों का इलाज करने वाले एक माहिरे नफ़्सियात डोक्टर ने बताया कि दुन्या भर में लोग सुकून और ए'तिमाद ह़ासिल करने, अपने मिज़ाज को ठंडा बनाने और दबाव या मायूसी की कैफ़िय्यत से निकलने के लिये शराब नोशी करते हैं। **मगर कषीर शराब नोशी की वजह से अ़ारिज़ए क़ल्ब** (Heart problem), फ़शारे ख़ून (Blood pressure), ज़ियाबैत़ुस (Sugar), जिगर और गुर्दों (Kidney) के मरज़ में मुब्तला हो जाते हैं।

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 1548 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "फ़ैज़ाने सुन्नत" सफ़ह़ा 426 पर शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं: इस्लाम ने शराब नोशी को जो ह़राम क़रार दिया है इस में बे शुमार ह़िक्मतें हैं, अब कुफ़्फ़ार भी इस के नुक़्सानात को तस्लीम करने लगे हैं, चुनान्चे एक ग़ैर

मुस्लिम **मुहक़्क़िक़** के **तअष्षुरात** के मुताबिक़ शुरूअ़ शुरूअ़ में तो बदने इन्सानी शराब के नुक़्सानात का मुक़ाबला कर लेता है और शराबी को खुशगवार कैफ़िय्यत मिल जाती है मगर जल्द ही दाख़िली (या'नी जिस्म की अन्दरूनी) कुव्वते बरदाश्त ख़त्म हो जाती और मुस्तक़िल मुज़िर अषरात मुरत्तब होने लगते हैं।

शराब का सब से ज़ियादा अषर जिगर (कलेजे) पर पड़ता है और वोह सुकड़ने लगता है, गुर्दों पर इज़ाफ़ी बोझ पड़ता है जो बिल आख़िर निढाल हो कर अन्जामे कार नाकारा (FAIL) हो जाते हैं, इलावा अज़ीं शराब के इस्ति'माल की कषरत दिमाग़ को **मुतवर्रम** (या'नी सूजन में मुब्तला) करती है, आ'साब में सोज़िश हो जाती है नतीजतन आ'साब कम्ज़ोर और फिर तबाह हो जाते हैं, शराबी के मे'दे में सूजन हो जाती है, हड्डियां नर्म और ख़स्ता (या'नी बहुत ही कमज़ोर) हो जाती हैं, शराब जिस्म में मौजूद विटामिन्स के ज़ख़ाइर को तबाह करती है, विटामिन B और C इस की ग़ारतगिरी का बिलखुसूस निशाना बनते हैं। शराब के साथ साथ तम्बाकू नोशी की जाए तो इस के नुक़्सान देह अषरात कई गुना बढ़ जाते हैं और हाई बल्ड् प्रेशर, सेट्रोक और हार्ट अटेक का शदीद ख़त्रा रहता है। बकषरत शराब पीने वाला थकन, सर दर्द, मतली और शिद्दते प्यास में मुब्तला रहता है। बे तहाशा शराब पी जाने से दिल और अ़मले तनफ़्फ़ुस (सांस लेने का अ़मल) रुक जाता और शराबी फ़ौरी तौर पर मौत के घाट उतर जाता है।

गर आए शराबी मिटे हर ख़राबी
चढ़ाएगा ऐसा नशा मदनी माहोल
अगर चोर डाकू भी आ जाएंगे तो
सुधर जाएंगे गर मिला मदनी माहोल
नमाज़ें जो पढ़ते नहीं हैं इन को लारैब
नमाज़ी है देता बना मदनी माहोल

(फ़ैज़ाने सुन्नत, स. 426)

शराब के अख़्लाक़ी व मुआ़शरती नुक़्सानात

शराब पीने से शराबी के अपने अख़्लाक़ तो तबाहो बरबाद होते ही हैं मगर पूरे मुआ़शरे पर भी इस के गहरे अषरात मुरत्तब होते हैं। चुनान्चे,

बरत़ानिया जो मुहज़्ज़ब दुन्या का अ़लम बरदार होने का दा'वा करता है, वहां के मेट्रो पोलीटिन पूलीस चीफ़ ने अपने एक इन्टरव्यू में बताया कि **रात के वक़्त बहुत सारी शराब पी कर धुत हो जाने वाले शराबी पूलीस के लिये दर्दे सर बने हुए हैं और मौजूदा साल में सिर्फ़ लन्दन में पूलीस पर ह़म्लों में चालीस फ़ीसद इज़ाफ़ा हुवा है।**

येह इ़ल्म, येह ह़िक्मत, येह तदब्बुर, येह ह़ुकूमत
पीते हैं लहू, देते हैं ता'लीमे मसावात
बे कारी व उ़रयानी व मेंख़्वारी व इफ़्लास
क्या कम हैं फ़िरंगी मद निय्यत के फ़ुतूह़ात

दौरे हाज़िर में मुतमद्दिन व मुअ़ज़्ज़ज़ मुआ़शरा कहलाने वालों का जब येह ह़ाल है कि क़ानून नाफ़िज़ करने वाले इदारे शराबियों के शर से महफ़ूज़ नहीं तो जो मुआ़शरा तहज़ीबो तमद्दुन से दूर हो वहां आ़म लोगों का ह़ाल क्या होगा ?

शराबी को अपने पराए की तमीज़ नहीं रहती

शराब के नशे में बद मस्त हो कर शराबी जब अपनी ज़ात से भी ग़ाफ़िल हो जाता है तो दूसरों का लिह़ाज़ कैसे रखेगा ? बेगाने तो बेगाने इसे तो अपनों का भी एह़सास नहीं रहता। चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाते हैं कि मैं ने **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से शराब के मुतअ़ल्लिक़ पूछा तो आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''येह सब से बड़ा गुनाह और तमाम बुराइयों की जड़ है। शराब पीने वाला नमाज़ छोड़ देता है और (बा'ज़ अवक़ात) **अपनी मां, ख़ाला और फूफी तक से बदकारी का मुर्तकिब हो जाता है।''**

(مجمع الزوائد، کتاب الاشربۃ، باب ماجاء فی الخمر، الحدیث: ۸۱۷۴، ج۵، ص۱۰۴ مفہوما)

शराबी और इस का ख़ानदान

शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के मज़्कूरा फ़रमान से मा'लूम हुवा कि शराब सिर्फ़ शराबी के लिये ही नुक़्सान का बाइ़स नहीं बनती बल्कि इस की नह़ूसत शराबी के

पूरे ख़ानदान को अपनी लपेट में ले लेती है। ख़ानदान की इ़ज़्ज़त व नामूस ख़ाक में मिल जाती है, बच्चे हर वक़्त नशे में धुत रहने वाले शराबी बाप से नफ़रत करने लगते हैं क्यूंकि वोह सारी ज़िन्दगी बाप की शफ़्क़त से महरूम रहते हैं और बाप से अगर कुछ मिलता भी है तो फ़क़त मार पीट और डांट डपट। अल ग़रज़ घर का सारा निज़ाम दरहम बरहम हो जाता है ! चुनान्चे,

इमाम अबुल फ़रज अ़ब्दुर्रह़मान बिन अ़ली मुह़द्दिष जौज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى (मुतवफ़्फ़ा सि. 597 हि.) फ़रमाते हैं कि बा'ज़ अवक़ात शराब, शराबी की बीवी को इस पर ह़राम कर देती है और बदकारी में मुब्तला हो जाता है इस की सूरत येह होती है कि शराबी नशे में मदहोश हो कर अकषर त़लाक़ दे देता है और बा'ज़ अवक़ात ला शुऊ़री त़ौर पर क़सम तोड़ डालता है तो अपनी ह़राम की हुई बीवी से बदकारी कर बैठता है। बा'ज़ सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان का क़ौल है : "जिस ने अपनी बेटी को किसी शराबी के निकाह़ में दिया गोया उस ने अपनी बेटी को बदकारी के लिये पेश कर दिया।" (بحر الدموع، ص۲۱۵)

बरत़ानिया में होने वाले एक ताज़ा सर्वे के मुत़ाबिक़ उन बच्चों में बड़े हो कर शराब का आ़दी बनने के इमकानात दुगने होते हैं जो अपने वालिदैन को नशे की ह़ालत में देखते हैं। सर्वे करने वाले बरत़ानवी इदारे के मुत़ाबिक़ लड़कपन में शराब नोशी की आ़दत का तअ़ल्लुक़ बचपन में वालिदैन की त़रफ़ से मुनासिब

सर परस्ती न मिलने से भी होता है जब कि दोस्तों की सोह़बत भी शराब नोशी की त़रफ़ माइल करने की अहम वजह हो सकती है। सर्वे के मुत़ाबिक़ आप जितना ज़ियादा वक़्त शराबी दोस्तों को देंगे उतना ही आप के शराब नोशी करने के इम्कानात बढ़ेंगे। इस सर्वे के दौरान तेरह से सोलह साल की उ़म्र के पांच हज़ार सात सो लड़कों और लड़कियों की आ़दात व अत़वार का जाइज़ा लिया गया जिस में हर पांच में से एक बच्चे ने बताया कि इन्हों ने चौदह साल की उ़म्र में पहली बार शराब पी जब कि इन बच्चों में से निस्फ़ या'नी लगभग दो हज़ार छे सो पचास बच्चों ने सोलह साल की उ़म्र में शराब पीने का दा'वा किया। बरत़ानिया में शराब नोशी की रोक थाम के लिये काम करने वाले इदारे "आलकोह़ोल कन्सरन" के सर बराह का कहना है कि येह सर्वे इस बात की तस्दीक़ करता है कि बच्चे की जिन्दगी के आग़ाज़ से ही इन की मुस्तक़बिल की आ़दात पर वालिदैन का गहरा अषर होता है। इस रिपोर्ट की तह़क़ीक़ में क्लेदी किरदार अदा करने वाली एक ख़ातून का कहना है कि इस तह़क़ीक़ से पता चला है कि ख़ानदान और दोस्तों के रविय्ये बच्चों पर अषर अन्दाज़ होते हैं।

शराबियों से दूर रहने का हुक्म

इस्लाम एक मुकम्मल ज़ाबित़ए ह़यात है और इस ने अपने मानने वालों को सदियों पहले येह बता दिया था कि बुरी सोह़बत से दूर रहने ही में आ़फ़िय्यत है। चुनान्चे,

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : "जब शराबी बीमार हो जाएं तो उन की इ़यादत न करो।"

(الادب المفرد للبخاری، باب عیادۃ الفاسق،الحدیث:۵۲۹،ص ۱۴۰)

और हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ने ज़िक्र फ़रमाया : "हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि शराबियों को सलाम न करो।"

(صحیح البخاری، کتاب الاستئذان، باب من لم یسلم علی من اقترف ذنبا......الخ، ج۴، ص ۱۷۳)

सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "न शराबियों के साथ बैठो, न उन के बीमार होने पर इ़यादत करो और न ही उन के जनाज़ों में शिर्कत करो, शराब पीने वाला बरोज़े क़ियामत इस ह़ाल में आएगा कि उस का चेहरा सियाह होगा, उस की ज़बान सीने पर लटक रही होगी, थूक बह रहा होगा और हर देखने वाला उस से नफ़रत करेगा।"

(الکامل فی ضعفاء الرجال، الرقم ۱۳۹۹ الحکم بن عبداللہ، ج ۲، ص ۵۰۲)

बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام फ़रमाते हैं कि शराबियों की इ़यादत करने और उन्हें सलाम करने से मन्अ़ किया गया है, इस लिये कि शराब पीने वाला फ़ासिक़ व मलऊ़न है जैसा कि रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस पर ला'नत फ़रमाई है, पस अगर उस ने शराब का सामान या आलात ख़रीद कर शराब बनाई तो वोह दो मरतबा मलऊ़न है और अगर किसी दूसरे को पिलाई तो तीन मरतबा मलऊ़न है, इसी वजह से उस की

इयादत करने और उसे सलाम करने से मन्अ़ किया गया है मगर येह कि वोह तौबा करे या'नी अगर उस ने तौबा कर ली तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस की तौबा क़बूल फ़रमाएगा।

(जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल, जि. 2, स. 580)

मा'लूम हुवा कि सोह़बत का अषर होता है क्यूंकि नेकों की सोह़बत नेक और बदों की सोह़बत बद बनाती है। इसी लिये हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने शराबियों के पास उठने बैठने वग़ैरा से मन्अ़ फ़रमाया। यहां ह़ज़रते सय्यिदुना जा'फ़रे सादिक़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الرَّزَّاق से मरवी नसीह़तों के चन्द मदनी फूल ज़िक्र करना फ़ाइदे से ख़ाली न होगा कि जो आप ने ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान षौरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی के बार बार अ़र्ज़ करने पर अ़ता फ़रमाए थे। चुनान्चे,

शहज़ादए रसूल के अ़ता कर्दा मदनी फूल

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 853 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल**" जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 75 पर है कि ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान षौरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना जा'फ़रे सादिक़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الرَّزَّاق के पास ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के शहज़ादे ! मुझे कुछ वसिय्यत फ़रमाइये।" तो उन्हों ने दो बातें इरशाद फ़रमाईं : "ऐ सुफ़्यान ! (1) मुरुव्वत (रिआ़यत, अख़्लाक़ से

पेश आना) झूटे के लिये और राह़त ह़ासिद के लिये नहीं होती और (2) अख़ुव्वत (भाई चारा) तंगदिल लोगों के लिये और सरदारी बद अख़्लाक़ लोगों के लिये नहीं होती।"

मैं ने अ़र्ज़ की : " ऐ शहज़ादए रसूल ! मज़ीद इरशाद फ़रमाइये।" तो उन्हों ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ सुफ़्यान ! (1) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ह़राम कर्दा कामों से रुके रहोगे तो तदब्बुर वाले बन जाओगे (2) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हारे लिये जो तक़्सीम मुक़र्रर की है उस पर राज़ी रहोगे तो सरे तस्लीम ख़म करने वाले बन जाओगे (3) लोगों से इसी त़रह़ मिलो जिस त़रह़ तुम चाहते हो कि वोह तुम से मिलें, इस त़रह़ ईमान वाले बन जाओगे और (4) **फ़ाजिर की सोह़बत में न बैठो कहीं वोह तुम्हें अपनी बदकारियां न सिखा दे,** जैसा कि मरवी है कि "आदमी अपने दोस्त के दीन पर होता है, लिहाज़ा तुम में से हर एक को चाहिये कि वोह देखे किस से दोस्ती कर रहा है।"

(جامع الترمذی، کتاب الزھد، باب الرجل علی دین خلیلہ، الحدیث:۲۳۸۵، ج۴، ص۱۶۷)

(5) और अपने मुआ़मलात में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ख़ौफ़ रखने वालों से मश्वरा कर लिया करो। मैं ने अ़र्ज़ की : "ऐ शहज़ादए रसूल ! मज़ीद इरशाद फ़रमाइये।" तो उन्हों ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ सुफ़्यान ! जो ख़ानदान के बिग़ैर इ़ज़्ज़त और हुक्मरानी के बिग़ैर हैबत और रो'ब व दबदबा ह़ासिल करना चाहता हो उसे चाहिये कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की नाफ़रमानी की ज़िल्लत से निकल

कर उस की फ़रमां बरदारी में आ जाए।" मैं ने अ़र्ज़ की : "ऐ शहज़ादए रसूल ! मज़ीद नसीहत फ़रमाइये ?" तो उन्हों ने इरशाद फ़रमाया : मुझे मेरे वालिदे गिरामी ने तीन बातें सिखाते हुए इरशाद फ़रमाया : "ऐ मेरे बेटे ! (1) जो बुरे आदमी की सोहबत इख़्तियार करता है, वोह सलामत नहीं रहता (2) जो बुराई की जगह जाता है, उस पर तोहमत लगती है और (3) जो अपनी ज़बान क़ाबू में नहीं रखता, वोह नादिम होता है।"

(जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल, जि. 1, स. 75)

शराब और शैतान

फ़रमाने बारी तआला है :

إِنَّمَا يُرِيدُ الشَّيْطٰنُ أَنْ يُّوْقِعَ بَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَاءَ فِي الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ وَيَصُدَّكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ وَعَنِ الصَّلٰوةِ ۚ فَهَلْ أَنْتُمْ مُّنْتَهُوْنَ ﴿٩١﴾ (پ۷، المائدۃ: ۹۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *शैत़ान येही चाहता है कि तुम में बैर और दुश्मनी डलवा दे शराब और जूए में और तुम्हें अल्लाह की याद और नमाज़ से रोके तो क्या तुम बाज़ आए।*

प्यारे इस्लामी भाइयो ! आयते मुबारका से दो बातें मा'लूम हूईं (1) शराब ज़िक्रे इलाही और नमाज़ से रोकती है और (2) दुश्मनी और बुग़्ज़ का बाइ़ष बनती है क्यूंकि शैत़ान इन्सान का खुला दुश्मन है जो कभी इन्सान का ख़ैर ख़्वाह नहीं हो सकता बल्कि वोह हर वक़्त इसी कोशिश में रहता है कि किसी त़रह़ इन्सान राहे ह़क़ से भटक जाए। चुनान्चे,

नमाज़ के मुतअ़ल्लिक़ हु़ज़ूर नबिय्ये पाक, साहि़बे लौलाक صَلَّى اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "जिस ने हा़लते नशा में एक नमाज़ छोड़ी गोया उस के पास दुन्या और इस में मौजूद सब कुछ था मगर उस से छीन लिया गया।"

(المسند للامام احمد بن حنبل، مسند عبد اللہ بن عمرو بن العاص، الحدیث:٦٦٧١، ج٢، ص٥٩٣ملتقطا)

एक और रिवायत में है कि : "जिस ने नशे की हा़लत में चार नमाज़ें छोड़ीं तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर ह़क़ है कि उसे **त़ीनतुल ख़बाल** से पिलाए।" अ़र्ज़ की गई : "**त़ीनतुल ख़बाल** क्या है?" इरशाद फ़रमाया : "जहन्नमियों की पीप।"

(المستدرک، کتاب الاشربۃ، باب اجتنبوا الخمر فانھا مفتاح کل شر،الحدیث:٧٣١٥،ج٥،ص٢٠٢)

तू नशे से बाज़ आ मत पी शराब
दो जहां हो जाएंगे वरना ख़राब

शराबियों का शैत़ान

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 176 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**फ़ैज़ाने बिस्मिल्लाह**" सफ़ह़ा 40 पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ फ़रमाते हैं : "शैत़ान की कषीर अवलाद है और इन की मुख़्तलिफ़ कामों पर ड्यूटियां लगी हुई हैं चुनान्चे ह़ज़रते अ़ल्लामा इब्ने ह़जर अ़स्क़लानी शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی नक़्ल करते हैं, अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना

उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि शैत़ान की अवलाद नव हैं : (1) **ज़लीतून** (2) **वषीन** (3) **लक़ूस** (4) **आ'वान** (5) **हफ़्फ़ाफ़** (6) **मुर्रह** (7) **मुसव्वित़** (8) **दासिम और** (9) **वल्हान।** इन में **हफ़्फ़ाफ़ नामी शैत़ान शराबियों के साथ होता है।"** (المنبہات للعسقلانی،ص۹۳تا۹٤ملخصا)

पस जब बन्दा हफ़्फ़ाफ़ नामी शैत़ान के बहकावे में आ कर अह़कामे ख़ुदावन्दी को पसे पुश्त डालता है और शैत़ान की सोह़बत इख़्तियार करता है तो सब से पहले उस की अ़क़्ल उस का साथ छोड़ जाती है। चुनान्चे,

शराब और अ़क़्ल

शराब का सब से बड़ा नुक़्सान येह है कि येह उस अ़क़्ल को ख़त्म कर देती है जो इन्सान की आ'ला व अशरफ़ सिफ़ात में से है। जब शराब आ'ला औसाफ़ की ह़ामिल शै अ़क़्ल की दुश्मन है तो इसी से इस का घटिया होना षाबित हो गया क्यूंकि अ़क़्ल को अ़क़्ल इस लिये कहते हैं कि येह साह़िबे अ़क़्ल को उन बुरे अफ़्आ़ल से रोकती है जिन की त़रफ़ उस की त़बीअ़त माइल होती है। लिहाज़ा जब बन्दा शराब पीता है तो बुराइयों से रोकने वाली अ़क़्ल ज़ाइल हो जाती है और वोह इन बुराइयों से मानूस हो जाता है। चूंकि शराब भी फ़ित़्री त़ौर पर इन्ही बुराइयों में से एक है लिहाज़ा वोह न सिर्फ़ उसे पीता है बल्कि नशे में मज़ीद दूसरे गुनाह भी कर डालता है यहां तक कि जब उस की अ़क़्ल वापस लौटती है तो उसे ह़क़ीक़त मा'लूम होती है।

(التفسیر الکبیر،البقرۃ،تحت الآیۃ:۲۱۹،ج۲،ص۴۰۰مفھوما)

पेशाब से वुज़ू करने वाला शराबी

हज़रते सय्यिदुना इमाम इब्ने अबिद्दुन्या رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं कि एक मरतबा मेरा गुज़र नशे में मस्त एक शख़्स के पास से हुवा, **वोह अपने हाथ पर पेशाब कर रहा था** और वुज़ू करने वाले की त़रह़ इस से अपना हाथ धो रहा था और कह रहा था : ''اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ جَعَلَ الْاِسْلَامَ نُوْرًا وَّ الْمَآءَ طَهُوْرًا'' या'नी तमाम ता'रीफ़ें उस ज़ात के लिये जिस ने इस्लाम को नूर और पानी को पाक करने वाला बनाया।'' (الزواجرعن اقتراف الکبائر، ج۲،ص۲۹۸)

शराबी की ख़त्म न होने वाली ह़िर्स

शराब पीना चूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाफ़रमानी का इर्तिकाब करना है, लिहाज़ा बन्दा जब इस मा'सिय्यत का मुर्तकिब होता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से दूर हो कर मज़ीद नाफ़रमानी के गढ़े में गिरता ही जाता है और इस त़रह़ शराब की मह़ब्बत व उल्फ़त इस के दिल में ऐसी बस जाती है कि इसे शराब के सिवा कुछ नहीं सूझता और दीगर गुनाहों के बर अ़क्स इस के लिये शराब की जुदाई बरदाश्त करना मुश्किल हो जाता है। चुनान्चे,

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 300 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब ''**आसूओं का दरिया**'' सफ़ह़ा 292 पर है कि एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ने एक

शख़्स को नज़्अ़ के आ़लम में देखा, **जब उसे कलिमए त़य्यिबा की तल्क़ीन की जाती तो वोह कहता : "ख़ुद भी पियो और मुझे भी पिलाओ।"** (بحر الدموع،ص۲۱۶)

इमाम अबुल अ़ब्बास अह़मद बिन अ़ली बिन ह़जर मक्की शाफ़ेई (मुतवफ़्फ़ा सि. 974 हि.) अपनी किताब "**अज़्ज़वाजिर अ़न इक़्तिराफ़िल कबाइर**" में ऐसे ही शराब के ह़रीस इन्सान के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाते हैं कि जो बन्दा शराब के इ़लावा दीगर गुनाहों में मुब्तला होता है जब उस की ख़्वाहिश पूरी हो जाती है तो वोह इस गुनाह से दूर हो जाता है मगर शराब एक ऐसा गुनाह है जिस का आ़दी कभी इस से नहीं उकताता बल्कि पीना शुरूअ़ करता है तो पीता ही चला जाता है, उस की ह़िर्स बढ़ती ही जाती है। क्या आप बदकार को नहीं देखते कि उस की ख़्वाहिश एक ही बार इस गुनाह के इर्तिकाब से ख़त्म हो जाती है मगर शराबी जब शराब पीने लगता है तो बस पीता ही जाता है, जिस्मानी लज़्ज़त उसे घेर लेती है और वोह आख़िरत की याद से ग़ाफ़िल हो कर इसे भूली बिसरी बात की त़रह़ पसे पुश्त डाल देता है, लिहाज़ा उस का शुमार उन फ़ासिक़ीन में होने लगता है जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को भूल गए तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें अपनी जानों से भी ग़ाफ़िल कर दिया। (الزواجر عن اقتراف الکبائر،ج۲،ص۲۹۸)

सब से बड़ा गुनाह

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْهُمَا से मरवी है कि अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْهُ अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर

फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ और कुछ दूसरे सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان रहमते आलम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के बा'द इकट्ठे बैठे थे कि सब से बड़े गुनाह का ज़िक्र होने लगा लेकिन वोह इस का तअ़य्युन न कर सके तो उन्हों ने मुझे हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़म्र बिन अल आ़स رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُمَا की ख़िदमत में भेजा ताकि मैं उन से पूछ आऊं, पस उन्हों ने मुझे बताया : "सब से बड़ा गुनाह शराब पीना है।" मैं ने वापस आ कर येह बात बताई तो उन्हों ने मानने से इन्कार कर दिया और फ़ौरन उन की त़रफ़ चल पड़े यहां तक कि सब उन के घर पहुंच गए तो हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने उन्हें बताया कि आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "बनी इसराईल के किसी बादशाह ने एक शख़्स को पकड़ लिया और उसे इख़्तियार दिया कि वोह शराब पिये या किसी को क़त्ल करे या बदकारी करे या ख़िन्ज़ीर का गोश्त खाए वरना वोह उसे क़त्ल कर देंगे, चुनान्चे उस ने शराब पीना इख़्तियार कर लिया। जब उस ने शराब पी ली तो हर वोह काम किया जो वोह उस से करवाना चाहता था।"

(المستدرک، کتاب الاشربۃ، باب ان اعظم الکبائر شرب الخمر، الحدیث:۷۳۱۸، ج۵، ص۲۰۳ ملتقطاً)

अन्धा शराबी

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 1548 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब "**फ़ैज़ाने सुन्नत**" सफ़हा 427 पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते

इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं : "मुझे (या'नी सगे मदीना عُفِيَ عَنْهُ) को अच्छी त़रह़ याद है कि एक शोख़ मिज़ाज तनूमन्द नौजवान जोड़िया बाज़ार (बाबुल मदीना कराची) में मज़दूरी किया करता था, वोह ख़ूब जानदार होने और तड़ाक़ पड़ाक बोलने के सबब काफ़ी नुमायां था। फिर उस का एक दौर आया कि वोह अन्धा हो गया और निहायत ही अफ़्सुर्दगी के साथ भीक मांगता फिरता था। मा'लूम करने पर पता चला कि येह शराबी था और एक बार नाक़िस शराब पी लेने के सबब इस की आंखों के दिये (या'नी चराग़) बुझ गए।"

कर ले तौबा और तू मत पी शराब
होंगे वरना दो जहां तेरे ख़राब
जो जूआ खेले, पिये नादां शराब
क़ब्रो ह़श्र व नार में पाए अ़ज़ाब

(फ़ैज़ाने सुन्नत, स. 427)

शराब और मौत

शराबी शराब पीता है ज़िन्दगी का लुत़्फ़ दोबाला करने के लिये मगर उस कम अ़क़्ल को कभी येह मा'लूम नहीं हो पाता कि वोह ज़ह्र को तिर्याक़ समझ कर पी रहा है। चुनान्चे,

जूलाई 2008 में गुजरात (हिन्द) में ज़हरीली शराब पी कर 107 अफ़राद और 2007 में रियासत कर्नाटक (हिन्द) और तामिलनाडू (हिन्द) में तक़रीबन डेढ़ सो (150) अफ़राद हलाक

हुए और बाबुल मदीना (कराची) में ज़हरीली शराब के इस्ति'माल की वजह से 2007 में सिर्फ़ तीन (3) दिन में चालीस (40) अफ़राद हलाक हुए।

एक मग़रिबी मुहक़्क़िक़ का कहना है कि 12 से 23 साल की उ़म्र में शराब का आ़दी बन जाने वाले अफ़राद में से 51 फ़ीसद मौत का शिकार हो जाते हैं जब कि शराब न पीने वालों में से दस (10) फ़ीसद अफ़राद भी इस उ़म्र में नहीं मरते। एक दूसरे मश्हूर मुहक़्क़िक़ ने बताया कि बीस सालह जवान जिन के बारे में पचास (50) साल तक ज़िन्दा रहने की तवक़्क़ोअ़ की जाती है वोह शराब की वजह से 35 साल से ज़ियादा ज़िन्दा नहीं रह सकते और बीमा कम्पनियों के तजरिबात से भी षाबित हो चुका है कि शराबियों की उ़म्र दूसरों की निस्बत 25 से 30 फ़ीसद कम होती है।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! शराब के इन्ही बे शुमार नुक़्सानात की वजह से इस्लाम में इसे हमेशा के लिये **ह़राम** क़रार दिया गया है।

शराब पर पाबन्दी की कोशिशें

यूरोप जो सदियों से शराब का घर है वहां मेलॉन (Melon) की इन्तिज़ामिया ने कषरत से शराब नोशी को रोकने के लिये नौ उ़म्रों को शराब फ़रोख़्त करने पर पाबन्दी आ़इद कर दी है। सोलह साल से कम उ़म्र के लड़के और लड़कियां अगर शराब नोशी करते हुए पकड़े गए तो इन के वालिदैन पर तक़्रीबन पांच सो यूरो तक का जुर्माना आ़इद किया जा सकता है। एक रिपोर्ट के मुताबिक़

शहर में ग्यारह साल तक के हर तीसरे बच्चे को शराब नोशी से मुतअ़ल्लिक़ मसाइल का सामना है। एक ऐसे मुल्क में जहां सदियों से वाइन (एक क़िस्म की शराब) मक़ामी षक़ाफ़त का हिस्सा रही हो वहां येह पाबन्दी लोगों के लिये एक बहुत हैरान कुन क़दम है। मुल्क में नौ जवानों और बिल ख़ुसूस ग्यारह साल तक के बच्चों में बढ़ती हुई शराब नोशी शदीद तश्वीश का सबब बनी रही, सब शराब ख़ानों, रेस्तोरानों, पीज़ा और शराब की दुकानों में 16 साल से कम उम्र के बच्चों को शराब फ़रोख़्त करने पर पाबन्दी है। क़ानून पर अ़मल न होने की सूरत में वालिदैन या फिर उस दुकानदार पर जुर्माना आ़इद किया जाएगा जिस ने इन्हें शराब फ़रोख़्त की होगी !

प्यारे इस्लामी भाइयो ! दुन्या के मुहज़्ज़ब मुमालिक कहलाने वाले अपनी नौजवान नस्ल को शराब की नुहूसतों से बचाने के लिये हर मुमकिन कोशिश कर रहे हैं और इस सिलसिले में भारी जुर्माने भी लोगों से वुसूल किये जा रहे हैं मगर आइये अब ज़रा येह देखते हैं कि इस्लाम ने शराब की रोक थाम के लिये उम्मते मुस्लिमा की किस त़रह़ तर्बिय्यत फ़रमाई।

अ़रब मुआ़शरे में शराब लोगों की ज़िन्दगी का एक हिस्सा बन चुकी थी, इन्हें इस से दूर करना इतना आसान न था, लिहाज़ा इस्लाम ने सब से पहले शराब के नुक़्सानात से लोगों को रू शनास कराया ताकि शराब की मह़ब्बत नफ़रत में बदल जाए और फिर

मरह़ला वार इसे हमेशा के लिये ह़राम क़रार दे दिया । इस सिलसिले में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ऐसे बहुत से फ़रामीन हमारी राहनुमाई के लिये मौजूद हैं जिन में बड़े वाज़ेह़ अन्दाज़ में शराब से दूर रहने, इस के नुक़्सानात को समझने और इन से बचने का मदनी ज़ेह्न बनने के साथ साथ आख़िरत को याद रखने का दर्स भी मिलता है ।

शराबी और इस का ईमान

जो लोग कुफ़्र की अन्धेरी वादियों से निकल कर इस्लाम के उजालों में आ बसे इन के नज़दीक दौलते ईमान की बड़ी अहम्मिय्यत थी क्यूंकि इन्हों ने येह दौलत बे शुमार क़ुरबानियां दे कर ह़ासिल की थी । लिहाज़ा इन्हें बताया गया कि शराब पीना तर्क कर दीजिये कि कहीं इस राहे पुर ख़त़र पर चल कर ह़ासिल होने वाली गिरां माया दौलत तुम्हारे अपने ही हाथों बरबाद न हो जाए । चुनान्चे,

शराबी के ईमान के मुतअ़ल्लिक़ 5 फ़रामीने मुस्त़फ़ा

﴿1﴾ ..... जिस ने सुब्ह़ के वक़्त शराब पी वोह दिन भर मुशरिक की त़रह़ (अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की याद से ग़ाफ़िल) रहता है यहां तक कि शाम हो जाती है और इसी त़रह़ अगर किसी ने शाम के वक़्त शराब पी तो वोह रात भर मुशरिक की त़रह़ (अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की याद से ग़ाफ़िल) रहता है यहां तक कि सुब्ह़ हो जाती है ।

(المصنّف لعبد الرزاق، کتاب الاشربۃ والظروف، باب ما یقال فی الشراب، الحدیث: ۱۷۳۸۳، ج۹، ص۱۴۹ ملتقطا)

﴾2﴿.....बदकार जब बदकारी करता है तो वोह मोमिन नहीं होता, चोर जब चोरी करता है तो वोह मोमिन नहीं होता और शराबी जब शराब पीता है तो वोह भी मोमिन नहीं होता।

(صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب بیان نقصان الایمان بالمعاصی......الخ، الحدیث:۵۷، ص۴۸)

﴾3﴿..... जिस ने बदकारी की या शराब पी तो उस ने अपनी गरदन से इस्लाम का पट्टा उतार दिया, फिर अगर वोह तौबा कर ले तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की तौबा क़बूल फ़रमा लेता है।

(سنن النسائی، کتاب قطع السارق، باب تعظیم السرقۃ، الحدیث:۴۸۸۲، ص۷۸۳، ملتقطا)

﴾4﴿..... जो शख़्स शराब पीता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के दिल से ईमान का नूर निकाल देता है। (المعجم الاوسط، الحدیث:۴۳۴۱، ج۱، ص۱۱۰)

﴾5﴿.... जो बदकारी करता है या शराब पीता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस से ईमान इस तरह खींच लेता है जिस तरह इन्सान अपने सर से क़मीस उतार देता है।

(المستدرک، کتاب الایمان، باب اذا زنی العبد خرج منہ الایمان، الحدیث:۶۵، ج۱، ص۱۷۶)

अन्धेरी क़ब्र का दिल से नहीं निकलता डर
करूंगा क्या जो तू नाराज़ हो गया या रब्ब
गुनाहगार हूं मैं लाइक़े जहन्नम हूं
करम से बख़्श दे मुझ को न दे सज़ा या रब्ब
बुराइयों पे पशेमां हूं रह्म फ़रमा दे
है तेरे क़हर पे ह़ावी तेरी अ़ता या रब्ब

ग़ाफ़िल शराबियों का अन्जाम

सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाहे नाज़ से तर्बिय्यत ह़ासिल करने वालों ने जब शराब को ईमान के ज़ियाअ़ का सबब जाना तो अपनी क़ीमती दौलत की ह़िफ़ाज़त के लिये शराब से मुंह मोड़ लिया और दोबारा कभी शराब की त़रफ़ मुड़ कर न देखा मगर जिन लोगों को ईमान की येह गिरां माया दौलत मुफ़्त में मिल जाती है और उन्हें इस के हुसूल के लिये किसी क़िस्म की कुरबानियां नहीं देना पड़तीं वोह शराब पी कर ईमान की ह़िफ़ाज़त में कोताही का शिकार हो जाते हैं। ऐसे लोगों को सोचना चाहिये कि क्या वोह खुद शैत़ान को येह आसानी फ़राहम नहीं करते कि वोह उन के ईमान की दौलत चुरा ले जाए ? हाए अफ़्सोस ! सद अफ़्सोस ! अगर इसी ह़ालत में मौत का क़ासिद उन के पास येह पैग़ाम ले कर आ गया कि बारगाहे खुदावन्दी में ह़ाज़िरी और आ'माल की जवाब देही का वक़्त आ चुका है और तौबा की मोहलत भी न मिली तो ऐसे लोगों का अन्जाम क्या होगा ? ऐसे ही कोताह फ़हमियों को इस वक़्त के आने से पहले ख़बरदार करते हुए दो जहां के ताजवर, सुलत़ाने बह़्रो बर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : **“शराब का आ़दी (बिग़ैर तौबा किये) मर गया तो वोह अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की बारगाह में बुत परस्त की त़रह़ पेश होगा ।”**

(المسند للامام احمد بن حنبل، مسند عبد اللہ بن العباس، الحدیث: ۲۴۵۳، ج۱، ص ۵۸۳)

बे वफ़ा दुन्या पे मत कर ए'तिबार
तू अचानक मौत का होगा शिकार
मौत आ कर ही रहेगी याद रख !
जान जा कर ही रहेगी याद रख !
गर जहां में सो बरस तू जी भी ले
क़ब्र में तन्हा क़ियामत तक रहे

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने अबी औफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि : "जो इस त़रह़ मरे कि वोह शराब का आ़दी हो तो वोह लात व उ़ज़्ज़ा की पूजा करने वाले की त़रह़ मरा।" जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से अ़र्ज़ की गई कि : "क्या शराब के आ़दी शख़्स से मुराद वोह बन्दा है जो हर वक़्त शराब में मदहोश रहता है ?" इरशाद फ़रमाया : "नहीं, बल्कि शराब का आ़दी वोह होता है जिसे जब भी शराब मिले पी ले अगर्चे कई साल के बा'द ही मिले।"

(کتاب الکبائر للذھبی، الکبیرۃ التاسعۃ عشرۃ: شرب الخمر، ص ۹۲۔ الکامل فی ضعفاء الرجال، الرقم ۴۴۵ الحسن بن عمارۃ، ج ۳، ص ۱۰۴)

हजरते सय्यिदुना अबू मूसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अपने वालिदे गिरामी से रिवायत करते हैं, वोह फरमाया करते थे "मैं शराब पीने या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को छोड़ कर इस सूतुन को पूजने में कुछ फ़र्क़ महसूस नहीं करता।

(سنن النسائی، کتاب الاشربۃ، باب ذکر الروایات المغلظات فی شرب الخمر، الحدیث: ۵۶۷۶، ص ۸۹۴)

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ 1012 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल**" जिल्द दुवुम सफ़्ह़ा 558 पर है कि इस से मुराद येह है कि शराबी और बुतों का पुजारी दोनों गुनाह में एक दूसरे के क़रीब क़रीब हैं और सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تعَالٰی عَلَیۡہِمۡ اَجۡمَعِین के मुतअ़ल्लिक़ मरवी है कि जब शराब ह़राम हुई तो इन में से कुछ अपने दूसरे दोस्तों के पास गए और कहने लगे : "शराब ह़राम कर दी गई है और इसे (गुनाह के ए'तिबार से) शिर्क के बराबर क़रार दिया गया है।" (المعجم الکبیر، الحدیث:۱۲۳۹۹، ج۱۲،ص۳۰)

बत़ौरे दवा शराब पीना

बत़ौरे दवा भी शराब पीना जाइज़ नहीं। जैसा कि उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہَا फ़रमाती हैं : "एक बार मेरी बेटी बीमार हो गई तो मैं ने उस के लिये एक कूज़ा (डन्डीदार प्याले) में नबीज़ बनाई" जब रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे पास तशरीफ़ लाए तो वोह नबीज़ जोश मार रही थी (या'नी इस पर झांग पैदा हो चुकी थी), आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया : "ऐ उम्मे सलमा (رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہَا) येह क्या है ?" मैं ने सारी बात अ़र्ज़ कर दी कि मेरी बेटी बीमार है और मैं ने येह नबीज़ इस के लिये तय्यार की है तो आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने जो चीज़ मेरी उम्मत पर ह़राम की है उस में उस के लिये शिफ़ा नहीं रखी।" (المعجم الکبیر، الحدیث:۷۴۹، ج۲۳،ص۳۲۶)

मा'लूम हुवा कि जिस शै को **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़राम ठहराया हो उस में कोई शिफ़ा नहीं । चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** मुह़म्मद बिन मुह़म्मद अ़ब्दरी फ़ासी मालिकी अल मा'रूफ़ बिब्नुल ह़ाज (मुतवफ़्फ़ा सि. 737 हि.) अपनी किताब **अल मुदख़ल** में फ़रमाते हैं कि मज़्कूरा ह़दीषे पाक से मा'लूम हुवा कि जो शै ह़राम हो उस की मन्फ़अ़त (नफ़्अ़ व फ़ाइदे) की बरकत भी ख़त्म हो जाती है । (المدخل،ج۲،ص۳۰۷)

शराब के सबब ईमान से मह़रूमी

ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन अ़याज़ رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه अपने एक शागिर्द के पास उस की ह़ालते नज़्अ़ के वक़्त तशरीफ़ लाए और उस के पास बैठ कर सूरए यासीन शरीफ़ पढ़ने लगे । तो उस शागिर्द ने कहा : ''सूरए यासीन पढ़ना बन्द कर दो ।'' फिर आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने उसे कलिमा शरीफ़ की तल्क़ीन फ़रमाई । वोह बोला : ''मैं हरगिज़ येह कलिमा नहीं पढूंगा मैं इस से बेज़ार हूं ।'' बस इन्हीं अल्फ़ाज़ पर उस की मौत वाक़ेअ़ हो गई । ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه को अपने शागिर्द के बुरे ख़ातिमे का सख़्त सदमा हुवा । चालीस रोज़ तक अपने घर में बैठे रोते रहे । चालीस (40) दिन के बा'द आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने ख़्वाब में देखा कि फ़िरिश्ते उस शागिर्द को **जहन्नम** में घसीट रहे हैं । आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه

ने उस से इस्तिफ़्सार फ़रमाया : “किस सबब से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तेरी मा'रिफ़त सल्ब फ़रमा ली ? मेरे शागिर्दों में तेरा मक़ाम तो बहुत ऊंचा था !” उस ने जवाब दिया : “तीन (3) उ़यूब के सबब से : (1) **चुग़ली** कि मैं अपने साथियों को कुछ बताता था और आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعالٰی عَلَیْه को कुछ और (2) **ह़सद** कि मैं अपने साथियों से ह़सद करता था (3) **शराब नोशी** कि एक बीमारी से शिफ़ा पाने की ग़रज़ से त़बीब के मश्वरे पर हर साल शराब का एक गिलास पीता था।”

(مِنھاجُ العابِدین، اصول سلوک طریق الخوف والرجاء، الاصل الثالث فی ذکر ماوعد......الخ، ص ١٦٥۔ دار موسسۃ الرسالۃ)

घुप अन्देरी क़ब्र में जब जाएगा
बे अ़मल ! बे इन्तिहा घबराएगा
काम मालो ज़र वहां न आएगा
ग़ाफ़िल इन्सां याद रख पछताएगा

जब दवा के त़ौर पर शराब पीने वाले का येह अन्जाम हुवा तो उन लोगों का क्या ह़ाल होगा जो इसे बिला उ़ज़्र पीते हैं ? हम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से हर आफ़त व मुसीबत से आ़फ़िय्यत त़लब करते हैं।

गधे को घोड़ा बनाने की कोशिश

बा'ज़ नादान शराबी शराब पीते हुए दिल को येह तसल्ली दे लेते हैं कि येह शराब नहीं बल्कि येह तो व्हिस्की, ब्रान्डी, शेम्पेन या बीयर है और इस त़रह़ येह नादान जान बुझ कर गधे को घोड़ा

बनाने की कोशिश करते हैं ह़ालांकि गधा गधा है और घोड़ा घोड़ा है। शराब का नाम तब्दील करने से कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता बल्कि शराब शराब ही रहती है। हां अलबत्ता ! उन नादानों की इस नादानी को मदीने के ताजदार, बि इज़्ने परवर दगार, ग़ैबों पर ख़बरदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने आज से सदीयों पहले यूं बयान फ़रमाया : "मेरी उम्मत के कुछ लोग शराब का नाम तब्दील कर के इसे पियेंगे, उन के सरों पर आलाते मूसीक़ी बजाए जाएंगे और गाने वाली लौंडियां गाएंगी, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन को ज़मीन में धंसा देगा और बा'ज़ को बन्दर और ख़िन्ज़ीर बना देगा।"

(سنن ابن ماجہ، کتاب الفتن، باب العقوبات، الحدیث:۴۰۲۰، ج۴، ص۳۶۸)

शराब नोशी की दस बुरी ख़स्लतें

इमाम अबुल फ़रज अ़ब्दुर्रह़मान बिन अ़ली मुह़द्दिष जौज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى (मुतवफ़्फ़ा सि. 597 हि.) बह़रुद्दुमूअ़ में फ़रमाते हैं :

याद रखो ! शराब नोशी में दस बुरी ख़स्लतें हैं :

﴾1﴿..... येह बन्दे की अ़क़्ल में फ़ुतूर डाल देती है इस त़रह़ वोह बच्चों के लिये तमाशा और मज़ाक़ बन जाता है। इमाम इब्ने अबिद्दुन्या رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ने एक शराबी को पेशाब करते हुए देखा वोह अपने मुंह पर पेशाब मल रहा था और कह रहा था : "या इलाही (عَزَّوَجَلَّ) मुझे कषरत से तौबा करने वालों और पाकीज़ा रहने वालों में शामिल फ़रमा।" मज़ीद फ़रमाते हैं : मैं ने

नशे में मदहोश एक शख़्स को देखा जिस ने क़ै की थी और कुत्ता उस का मुंह चाट रहा था तो वोह नशा करने वाला उस से कह रहा था : "ऐ मेरे आक़ा ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझे औलिया जितनी बुज़ुर्गी अ़ता फ़रमाए।"

﴾2﴿..... येह माल को ज़ाएअ़ और बरबाद करती है और तंगदस्ती का सबब बनती है जैसा कि अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने दुआ़ मांगी : "इलाही عَزَّوَجَلَّ हमें शराब के बारे में वाज़ेह़ हुक्म इरशाद फ़रमा दे क्यूंकि येह माल को बरबाद और अ़क़्ल को ख़त्म कर देती है।"

﴾3﴿..... येह अ़दावत और दुश्मनी का सबब है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

اِنَّمَا يُرِيْدُ الشَّيْطٰنُ اَنْ يُّوْقِعَ بَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَآءَ فِى الْخَمْرِ وَ الْمَيْسِرِ وَيَصُدَّكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ وَعَنِ الصَّلٰوةِ فَهَلْ اَنْتُمْ مُّنْتَهُوْنَ ﴿۹۱﴾ (پ۷، المائدۃ:۹۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *शैत़ान येही चाहता है कि तुम में बैर और दुश्मनी डलवा दे शराब और जूए में और तुम्हें अल्लाह की याद और नमाज़ से रोके तो क्या तुम बाज़ आए।*

जब येह आयते मुबारका नाज़िल हुई तो ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ किया : "या रब्ब عَزَّوَجَلَّ हम बाज़ आ गए।"

﴾4﴿...... शराब खाने की लज़्ज़त और दुरुस्त कलाम से शराबी को मह़रूम कर देती है।

﴾5﴿.... बा'ज़ अवक़ात शराब, शराबी पर उस की बीवी को ह़राम कर देती है और इस के बा वुजूद औ़रत का मर्द के साथ (बीवी के तौ़र पर) रहना बदकारी है। इस की सूरत येह है कि शराबी अकषर नशे में त़लाक़ दे देता है और बा'ज़ अवक़ात दी हुई त़लाक़ को ऐसे भूल जाता है कि उसे एह़सास तक नहीं होता और यूं अपनी ह़राम की हुई बीवी से बदकारी का मुर्तकिब हो जाता है।

बा'ज़ सह़ाबए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان से मन्क़ूल है : "**जिस ने अपनी बेटी को किसी शराबी के निकाह़ में दिया गोया उस ने अपनी बेटी को बदकारी के लिये पेश कर दिया।**"

﴾6﴿..... येह हर बुराई की कुन्जी है और शराबी को बहुत से गुनाहों में मुब्तला कर देती है जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के बारे में मरवी है, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने अपने ख़ुत़्बे में इरशाद फ़रमाया : "ऐ लोगो ! शराब नोशी से बचते रहो क्यूंकि येह तमाम बुराइयों की जड़ है।"

﴾7﴿..... येह शराबी को बदकारों की मजलिस में ले जाती है, अपनी बदबू से उस के कातिब फ़िरिश्तों को ईज़ा देती है।

﴾8﴿..... येह शराबी पर आस्मानों के दरवाज़े बन्द कर देती है। चालीस (40) दिन तक न उस का कोई अ़मल ऊपर पहुंचता है न ही दुआ़।

﴾9﴿.... शराब नोशी, शराबी पर अस्सी कोड़े वाजिब कर देती है लिहाज़ा अगर वोह दुन्या में इस सज़ा से बच भी गया तो आख़िरत में मख़्लूक़ के सामने उसे कोड़े मारे जाएंगे।

﴾10﴿.....येह शराबी की जान और ईमान को ख़त्रे में डाल देती है । इस लिये मरते वक़्त ईमान छिन जाने का ख़दशा रहता है । (بحر الدموع، ص ۲۱۴)

शराबी पर ला'नत

रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने **शराब के मुआ़मले में 10 बन्दों पर ला'नत फ़रमाई है :** "(1) शराब बनाने वाला (2) बनवाने वाला (3) पीने वाला (4) उठाने वाला (5) उठवाने वाला (6) पिलाने वाला (7) बेचने वाला (8) इस की क़ीमत खाने वाला (9) ख़रीदने वाला और (10) ख़रीदवाने वाला।" (سنن الترمذی، کتاب البیوع، باب النھی ان یتخذ الخمر خلا، الحدیث:۱۲۹۹، ج۳، ص ۴۷)

इमाम मुह़म्मद बिन उ़षमानुज़्ज़हबी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی (मुतवफ़्फ़ा सि. 748 हि.) **किताबुल कबाइर** में फ़रमाते हैं कि शराबी फ़ासिक़ व मलऊ़न होता है जैसा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस पर ला'नत फ़रमाई है, पस अगर किसी ने शराब बनाने की निय्यत से कोई ऐसी शै ख़रीदी जिस से शराब बनाई जाती है तो वोह एक मरतबा मलऊ़न होगा और अगर उस ने उस शै से शराब तय्यार कर ली तो वोह दो मरतबा मलऊ़न होगा और अगर तय्यार करने के बा'द किसी दूसरे को पिलाई तो तीन मरतबा मलऊ़न होगा ।

(کتاب الکبائر، الکبیرۃ التاسعۃ عشرۃ، شرب الخمر، ص ۹۴ مفھوماً)

शराब के क़त़रे से भी नफ़रत

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم फ़रमाते हैं कि अगर शराब का एक क़त़रा कुंवें में गिर जाए फिर उस जगह मनारा बनाया जाए तो मैं उस पर अज़ान न कहूं और अगर दरिया में शराब का क़त़रा पड़े फिर दरिया खुश्क हो और वहां घास पैदा हो उस में अपने जानवरों को न चराऊं। (تفسیر کشاف، پ۲، البقرۃ، تحت الآیۃ:۲۱۹، ج۱، ص۲۶۰)

शराब के एक घूंट की सज़ा

मह़बूबे रब्बे दावर, शफ़ीए रोज़े मेह़शर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है कि अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने मुझे तमाम जहानों के लिये रह़मत और हिदायत बना कर भेजा और हुक्म फ़रमाया कि मज़ामीर (या'नी गाने के आलात), सारंगियां और त़बले तोड़ डालूं और बुतों को पाश पाश कर दूं जिन की ज़मानए जाहिलिय्यत में पूजा की जाती थी, मेरे परवर दगार عَزَّ وَجَلَّ ने अपनी इ़ज़्ज़त की क़सम याद कर के इरशाद फ़रमाया कि **मेरा जो बन्दा शराब का एक घूंट पियेगा इस के बदले उसे जहन्नम का खोलता हुवा पानी पिलाऊंगा ख़्वाह उसे अ़ज़ाब दिया गया हो या बख़्श दिया गया हो और मेरा जो बन्दा मेरे ख़ौफ़ से शराब न पियेगा मैं उसे जन्नत की (पाकीज़ा) शराब पिलाऊंगा।**

(المسند للامام احمد بن حنبل، حدیث ابی امامۃ الباھلی، الحدیث:۲۲۲۸۱، ج۸، ص۲۸۶ ملتقطا)

कर ले तौबा रब्ब की रह़मत है बड़ी
क़ब्र में वरना सज़ा होगी कड़ी

एक रिवायत में है कि शहनशाहे मदीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “ **जो शराब का एक घूंट पियेगा अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **तीन दिन तक उस का कोई फ़र्ज़ क़बूल फ़रमाएगा न नफ़्ल और जो एक गिलास पियेगा अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **चालीस दिन तक उस की कोई नमाज़ क़बूल न फ़रमाएगा और जो हमेशा शराब पियेगा अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **पर ह़क़ है कि उसे नहरुल ख़बाल से पिलाए ।** अ़र्ज़ की गई : “**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **नहरुल ख़बाल** क्या है ?” इरशाद फ़रमाया : “**दोज़ख़ियों की पीप ।**”

(المعجم الکبیر، الحدیث: ۱۱۴۶۵، ج۱۱، ص ۱۵۴......الترغیب والترھیب، کتاب الحدود، باب الترھیب من شرب الخمر......الخ، الحدیث: ۳۶۲۶، ج۳، ص ۲۰۸)

शराबी पर ख़ुदा की नाराज़ी

सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : “जो शख़्स शराब पिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ चालीस (40) दिन तक उस पर नाराज़ रहता है और वोह शराबी नहीं जानता कि हो सकता है उस की मौत इन्ही रातों में वाक़ेअ़ हो जाए, अगर वोह दोबारा पिये तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ चालीस (40) दिन तक उस पर नाराज़ रहता है जब कि वोह नहीं जानता कि शायद उस की मौत इन्ही रातों में वाक़ेअ़ हो जाए और अगर वोह फिर पिये तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ चालीस (40) दिन तक उस पर नाराज़ रहता है

और येह एक सो बीस दिन हो गए, इस के बा'द अगर वोह फिर पिये तो **रदग़तुल ख़बाल** में होगा।" अ़र्ज़ की गई : "**रदग़तुल ख़बाल** क्या है ?" इरशाद फ़रमाया : जहन्नमियों का पसीना और पीप।

(الزواجر عن اقتراف الکبائر، ج۲، ص۳۱۰۔۔۔سنن ابن ماجہ، کتاب الاشربۃ، باب من شرب الخمر لم تقبل لہ صلاۃ، الحدیث: ۳۳۷۷، ج۴، ص۶۲، بتغیر)

रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "जिस ने शराब पी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस से चालीस दिन तक राज़ी न होगा, (इसी दौरान) अगर वोह मर गया तो ह़ालते कुफ़्र में मरेगा(1) और अगर उस ने तौबा कर ली तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की तौबा क़बूल फ़रमाएगा और अगर उस ने फिर शराब पी तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर ह़क़ है कि उसे **त़ीनतुल ख़बाल** से पिलाए।" अ़र्ज़ की गई : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **त़ीनतुल ख़बाल** क्या है ?" इरशाद फ़रमाया : "जहन्नमियों की पीप।"

(المسند للامام احمد بن حنبل، حدیث اَسماء ابنۃ یزید، الحدیث: ۲۷۶۷۴، ج۱۰، ص۴۴۳)

शराबी और उस की नमाज़

इस्लाम ने शराब की ख़बाषतों से मुसलमानों को दूर रखने के लिये बे शुमार इक़्दामात किये इन्ही में से एक येह भी था कि

---

(1).... शराबी के काफ़िर होने में शर्त़ येह है कि वोह शराब को ह़लाल जान कर पिये जैसा कि बहारे शरीअ़त में है : "जिस चीज़ की ह़िल्लत, नस्से क़त़्ई से षाबित हो उस को ह़राम कहना और जिस की ह़ुरमत यक़ीनी हो उसे ह़लाल बताना कुफ़्र है, जब कि येह ह़ुक्म ज़रूरियाते दीन से हो, या मुन्किर इस ह़ुक्मे क़त़्ई से आगाह हो।"(बहारे शरीअ़त, जि. 1 स.176, मक्तबतुल मदीना) और शराब की ह़ुरमत नस्से क़त़्ई से षाबित है।

उस की तमाम बुरी ख़स्लतों को बयान किया ताकि लोग इस से बचें। पस इस के इन्ही नुक़्सानात में से एक नुक़्सान येह भी है कि शराबी की चालीस दिन की नमाज़ क़बूल नहीं होती। चुनान्चे,

शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मेरा जो उम्मती शराब पियेगा उस की चालीस दिन की नमाज़ क़बूल न की जाएगी।"

(المستدرک، کتاب الامامۃ وصلاۃ الجماعۃ، باب اذا حضرت الصلوۃ......الخ، الحدیث: ۹۸۴، ج۱، ص ۵۳۷)

ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत صَلَّى اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "**जिस ने शराब पी उस की चालीस** (40) **दिन की नमाज़ क़बूल नहीं की जाती,** हां ! अगर तौबा कर ले तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की तौबा क़बूल फ़रमा लेता है, अगर दोबारा ऐसा करे तो फिर उस की चालीस दिन की नमाज़ क़बूल नहीं की जाती, हां ! फिर तौबा कर ले तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की इस बार भी तौबा क़बूल फ़रमा लेता है और अगर (तीसरी बार) फिर ऐसा करे तो उस की चालीस दिन की नमाज़ क़बूल नहीं की जाती, अलबत्ता इस मरतबा भी तौबा करने पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की तौबा क़बूल फ़रमा लेता है लेकिन अगर (चौथी मरतबा) फिर ऐसा करे तो उस की चालीस दिन की नमाज़ क़बूल नहीं की जाती। अब अगर तौबा भी करता रहे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की तौबा क़बूल न फ़रमाएगा बल्कि उसे **नहरुल ख़बाल** से पिलाएगा।" रावी से पूछा गया कि **नहरुल ख़बाल** क्या है ? तो उन्हों ने बताया कि वोह नहर जो दोज़ख़ियों की पीप से जारी होगी।

(سنن الترمذی، کتاب الاشربۃ، باب ماجاء فی شارب الخمر، الحدیث: ۱۸۶۹، ج۳، ص ۳۴۱)

मुजरिमों के वासिते दोज़ख़ भी शो'ला बार है
हर गुनह क़स्दन किया है इस का भी इक़रार है
हाए ! नाफ़रमानियां बदकारियां बे बाकियां
आह ! नामे में गुनाहों की बड़ी भरमार है

हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : "जिस ने शराब पी और उसे नशा न हुवा तो जब तक वोह उस के पेट या रगों में रहेगी उस की नमाज़ क़बूल न की जाएगी और अगर (इस दौरान) वोह मर गया तो ह़ालते कुफ़्र में मरेगा, और अगर (शराब पीने से) नशा हो गया तो उस की चालीस दिन की नमाज़ क़बूल न की जाएगी और अगर इस दौरान वोह मर गया तो कुफ़्र की ह़ालत में मरेगा।"

(سنن النسائی، کتاب الاشربۃ، باب ذکر الاٰثام المتولدۃ......الخ، الحدیث:۵۶۷۹، ص۸۹۵)

सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "जिस ने शराब पी और इसे अपने पेट में उतारा तो उस की सात दिन की नमाज़ क़बूल न की जाएगी, अगर इसी दौरान वोह मर गया तो कुफ़्र की ह़ालत में मरेगा।" मज़ीद इरशाद फ़रमाया : "अगर शराब ने उस की अ़क़्ल को ज़ाएअ़ कर दिया और कोई फ़र्ज़ साक़ित़ हो गया।" एक रिवायत में यूं है : "शराब ने उसे क़ुरआन भुला दिया तो उस की चालीस दिन की नमाज़ क़बूल न होगी और अगर इस दौरान वोह मर गया तो ह़ालते कुफ़्र में मरेगा।" (المرجع السابق، الحدیث:۵۶۸۰)

“अस्बाबे ज़वाले मुस्लिमीन” के पन्दरह हुरूफ़ की निस्बत से मुसलमानों के ज़वाल के (15) अस्बाब

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : “जब मेरी उम्मत पन्दरह बातों को अपना लेगी तो वोह मुसीबतों में घिर जाएगी ।” अ़र्ज़ की गई : “**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! वोह कौन सी हैं ?” तो आप صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “(1)..... जब ग़नीमत को ज़ाती दौलत (2).... अमानत को ग़नीमत और (3) ज़कात को तावान समझा जाने लगेगा (4).... आदमी अपनी बीबी की इत़ाअ़त और (5)...मां की नाफ़रमानी करेगा (6).... अपने दोस्त से अच्छा सुलूक और (7)....बाप से बद सुलूकी करेगा (8).... मसाजिद में आवाज़ें बुलन्द होंगी (9)...ज़लील तरीन शख़्स उन का हुक्मरान बन जाएगा (10)...इन्सान के शर के डर से उस की इ़ज़्ज़त की जाएगी (11).... **शराब पी जाएगी** (12)... रेशम पहना जाएगा (13)... गाने बजाने वाली लौंडीयां रखी जाएंगी (14)..... (घरों में) गाने बजाने के आलात रखे जाएंगे और (15)... इस उम्मत के बा'द वाले पहलों पर ला'न त़ा'न करेंगे । **तो उस वक़्त लोगों को चाहिये कि सुर्ख़ आंधी या ज़मीन में धंसने या चेहरों के मस्ख़ होने (या'नी बदल जाने) का इन्तिज़ार करें ।**

(سنن الترمذی، کتاب الفتن، باب ماجاء فی علامۃ حلول المسخ والخسف، الحدیث:۲۲۱۷، ج۴، ص۸۹)

अ़ज़ाब की मुख़्तलिफ़ सूरतें

हु़ज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! मेरी उम्मत के कुछ लोग गुनाहों, ग़ुरूर व तकब्बुर और लह्व लअ़ब में रात गुज़ारेंगे और सुब्ह़ इस ह़ाल में करेंगे कि ह़राम को ह़लाल जानने, गाने बजाने वाली लौंडियां रखने, शराब पीने और रेशम पहनने की वजह से मस्ख़ हो कर बन्दरों और ख़िन्ज़ीरों की सूरत में बदल चुके होंगे।"

(المسند للامام احمد بن حنبل، اخبار عبادۃ بن الصامت، الحدیث: ۲۲۸۵۴، ج۸، ص ۴۲۴)

एक रिवायत में ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "उस उम्मत का एक गिरोह खाने पीने और लह्व लअ़ब में रात गुज़ारेगा लेकिन सुब्ह़ वोह लोग उठेंगे तो बन्दर और ख़िन्ज़ीर बन चुके होंगे, उन्हें ज़मीन में धंसने और आस्मान से पथ्थर बरसने के वाक़िआ़त पेश आएंगे यहां तक कि लोग सुब्ह़ उठेंगे तो कहेंगे : "आज रात फ़ुलां क़बीला धंसा दिया गया और आज रात फ़ुलां शख़्स का घर धंसा दिया गया।" उन पर ज़रूर आस्मान से पथ्थर बरसाए जाएंगे जैसा कि क़ौमे लूत़ के क़बीलों और घरों पर बरसाए गए, उन पर ज़रूर तबाह करने वाली ऐसी आंधी भेजी जाएगी जिस ने क़ौमे आ़द को उन के क़बीलों और घरों में हलाक कर दिया था और ऐसा उन के शराब

पीने, रेशम पहनने, गाने वाली लौंडियां रखने, सूद खाने और क़त्ए रेहमी करने की वजह से होगा।

(شعب الایمان، باب فی المطاعم والمشارب، الحدیث: ۵۶۱۴، ج ۵، ص ۱۶)

शराबी की सज़ा

हज़रते सय्यिदुना इमाम अबुल अ़ब्बास अह़मद बिन मुह़म्मद बिन अ़ली बिन ह़जर मक्की शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی (मुतवफ़्फ़ा सि. 974 हि.) अपनी किताब "اَلزَّوَاجِر عَنْ اِقْتِرَافِ الْکَبَائِر" में फ़रमाते हैं कि हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "तमाम बुराइयों की जड़ शराब से बचो ! जो इस से न बचा उस ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की नाफ़रमानी की और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की नाफ़रमानी की वजह से अ़ज़ाब का मुस्तह़िक़ हो गया। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَمَنْ یَّعْصِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَیَتَعَدَّ حُدُوْدَهٗ یُدْخِلْهُ نَارًا خَالِدًا فِیْهَا ۪ وَلَهٗ عَذَابٌ مُّهِیْنٌ ﴿۱۴﴾ (پ ۴، النساء: ۱۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और जो अल्लाह और उस के रसूल की नाफ़रमानी करे और उस की कुल ह़दों से बढ़ जाए अल्लाह उसे आग में दाख़िल करेगा जिस में हमेशा रहेगा और उस के लिये ख़्वारी का अ़ज़ाब है।*

(الزواجر عن اقتراف الکبائر، ج ۲، ص ۳۱۴)

गर तू नाराज़ हुवा मेरी हलाकत होगी
हाए ! मैं नारे जहन्नम में जलूंगा या रब्ब !
दर्दे सर हो या बुख़ार आए तड़प जाता हूं
मैं जहन्नम की सज़ा कैसे सहूंगा या रब्ब !

शराबी की दुन्या में सज़ा

हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने शराब नोशी करने वाले को दरख़्त की शाख़ और जूतों से मारा, फिर अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने चालीस (40) कोड़े मारे, फिर जब अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के दौरे ख़िलाफ़त में लोग सब्ज़ा ज़ारों और देहातों के क़रीब रहने लगे तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने सहाबए किराम से शराब नोशी की ह़द (सज़ा) के मुतअ़ल्लिक़ मश्वरा त़लब किया कि इस के बारे में तुम्हारी क्या राए है ? तो हज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की राए के मुत़ाबिक़ शराब नोशी की ह़द अस्सी (80) कोड़े मुक़र्रर कर दी गई ।

(صحیح مسلم، کتاب الحدود، باب حد الخمر، الحدیث:۱۷۰۶، ص۹۳۸)

और बा'ज़ रिवायात में है कि अस्सी कोड़ों की सज़ा अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تعالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم के मश्वरे से मुक़र्रर की गई ।

(موطاامام مالک، کتاب الاشربۃ، باب الحد فی الخمر، الحدیث:۱۶۱۵، ج۲، ص۳۵۱)

शराबी की क़ब्र में सज़ा

जिस ने शराब पीने से तौबा न की और इसी ह़ालत में उसे मौत आ गई, उस के मुतअ़ल्लिक़ ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन मसऊ़द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ इरशाद फ़रमाते हैं कि : "जब शराबी मर जाए तो उसे दफ़्न कर दो, फिर मुझे एक लकड़ी पर लटका कर उस की क़ब्र खोदो, **अगर उस का चेहरा क़िब्ला से फिरा हुवा न पाओ तो मुझे यूंही लटकता छोड़ देना।**"

(کتاب الکبائر للذھبی، الکبیرۃ التاسعۃ عشرۃ: شرب الخمر، ص ۹۶)

मत गुनाहों पे हो भाई बे बाक तू
भूल मत येह ह़क़ीक़त कि है ख़ाक तू

ह़ज़रते सय्यिदुना मसरूक़ رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि जो शख़्स चोरी या शराब ख़ोरी या बदकारी में मुब्तला हो कर मरता है उस पर दो सांप **मुक़र्रर** कर दिये जाते हैं जो उस का गोश्त नोच नोच कर खाते रहते हैं। (شرح الصدور، ص ۱۷۲)

ग़ाफ़िलो ! क़ब्र में जिस घड़ी जाओगे
सांप बिच्छू जो देखोगे चिल्लाओगे
सर पछाड़ोगे पर कुछ न कर पाओगे
बेह़द अपने गुनाहों पे पछताओगे

प्यारे इस्लामी भाइयो ! क़ब्र में ईमान साथ रहा तो क़ब्र की सख़्तियों से भी नजात मिलेगी और वोह (क़ब्र) जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ भी होगी।

मुर्दा औ़रत ने कफ़न चोर को थप्पड़ मारा

ह़ज़रते अबू इस्ह़ाक़ عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الرَّزَّاق फ़रमाते हैं कि मैं ने एक शख़्स को आधा चेहरा छुपाए हुए देख कर इस का सबब पूछा तो उस ने बताया कि मैं रात के वक़्त क़ब्रें खोद कर कफ़न चूराया करता था। चुनान्चे एक रात मैं ने एक औ़रत की क़ब्र खोद कर कफ़न चुराना चाहा तो उस ने मुझे इस ज़ोर से थप्पड़ मारा जिस का निशान अब भी मेरे मुंह पर मौजूद है। फ़रमाते हैं कि कफ़न चोर की येह बात मैं ने इमाम अवज़ाई رَحۡمَةُ اللّٰهِ تعالٰی عَلَيۡه की ख़िदमत में लिख भेजी तो आप رَحۡمَةُ اللّٰهِ تعالٰی عَلَيۡه ने जवाबन मुझे इरशाद फ़रमाया कि उस कफ़न चोर से क़ब्र वालों के ह़ालात भी मा'लूम करने की कोशिश करूं। पस मेरे पूछने पर उस ने बताया कि मैं ने अकषर क़ब्र वालों को देखा कि उन के मुंह क़िब्ला से फिर चुके थे। पस इमाम अवज़ाई رَحۡمَةُ اللّٰهِ تعالٰی عَلَيۡه ने येह जान कर इरशाद फ़रमाया कि : "हाए अफ़्सोस ! येह वोह लोग हैं जिन का ख़ातिमा अच्छा नहीं हुवा या'नी येह लोग अपनी ज़िन्दगियों में ऐसे गुनाहों पर डटे रहे जिन्हों ने इन्हें इस ह़ालत तक पहुंचा दिया।"

(روح البیان، الجزء التاسع العشرۃ، الفرقان، ج۶، ص۲۴۹)

गोरे निकां बाग़ होगी ख़ुल्द का
मुजरिमों की क़ब्र दोज़ख़ का गढ़ा

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें बुरे ख़ातिमे से मह़फ़ूज़ फ़रमाए और मुस्लिम उम्मत को शराब की ला'नत से बचाए कि येह भी बुरे ख़ातिमे और अ़ज़ाबे क़ब्र का सबब बन सकती है। चुनान्चे,

बच्चा बुड्ढा हो गया

एक बुजु़र्ग फ़रमाते हैं कि मेरा एक बेटा फ़ौत हो गया, दफ़्न करने के कुछ दिन बा'द मैं ने उसे ख़्वाब में देखा कि उस के सर के बाल सफ़ेद हो चुके थे, मैं ने पूछा : "ऐ मेरे बेटे ! मैं ने तुझे दफ़्न किया तो तू बच्चा था, येह बुड्ढा कैसे हो गया ?" उस ने बताया : "ऐ मेरे वालिदे मुह़तरम ! मेरे क़रीब एक ऐसे शख़्स को दफ़्न किया गया **जो दुन्या में शराब पीता था, उस की क़ब्र में जहन्नम की आग इस शिद्दत से भड़की, कि गर्मी की शिद्दत से हर बच्चा बुड्ढा हो गया ।"**

(کتاب الکبائر للذھبی، الکبیرۃ التاسعۃ عشرۃ: شرب الخمر، ص ۹٦)

जहन्नम की गरदन

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि जब क़ियामत का दिन आएगा तो दोज़ख़ से गरदन नुमा आग बाहर निकलेगी जिस की दो आंखें होगी जिन से वोह देखेगी, दो कान होंगे जिन से वोह सुनेगी और एक ज़बान भी होगी जिस से वोह हैबतनाक लहजे में मुख़ात़ब होगी ।

(سنن الترمذی، کتاب صفۃ جہنم عن رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم، باب ماجاء فی صفۃ النار، الحدیث: ۲۵۸۳، ج ۴، ص ۲۵۹)

ह़ज़रते सय्यिदुना असद बिन मूसा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ **किताबुज़्ज़ोह्द** में फ़रमाते हैं कि वोह गरदन नुमा आग कहेगी : "मुझे सरकशों को मज़ा चखाने का हुक्म दिया गया है ।"

फिर वोह आग उडते हुए परन्दे के ज़मीन पर पड़े दाने को देख लेने से भी ज़ियादा तेज़ी से सरकशों को पकड़ पकड़ कर जहन्नम में झोंक देगी। फिर वोह कहेगी : "जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ईज़ा रसानी का सबब बनते थे, मुझे हुक्म दिया गया है कि उन्हें भी कड़ी सज़ा दूं" और इस त़रह़ वोह इन ईज़ा रसानों को उचक कर जहन्नम रसीद कर देगी।

(کتاب الزھدلاسدبن موسیٰ، باب ذکر مایدعٰی یوم القیامۃ، الحدیث:۷۷، ص۵۷)

गोया मैदाने ह़श्र में जहन्नम इ़ब्रतनाक अन्दाज़ में पुकार पुकार कर कहेगी :

कहां हैं ख़ुदाए रह़मान के मुख़ालिफ़ ?

कहां हैं ख़ुदाए दयान के दुश्मन ?

कहां हैं शैत़ान के दोस्त ?

ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ईज़ा रसानी का सबब बनने वाले शराबियो ! याद रखो कल क़ियामत में तुम्हें उस आग से बचने की कोई राह न मिलेगी, मेह़शर का हुजूम तुम्हें उस की आंख से बचा न पाएगा क्यूंकि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि वोह आग हर सरकश व नाफ़रमान को इस त़रह़ पहचानती होगी जैसे बाप बेटे को या बेटा बाप को पहचानता है।

(کتاب الزھدلاحمدبن حنبل، زہدعمیربن حبیب بن حماسۃ، الحدیث:۱۰۴۴، ص۲۰۵)

लफ़्ज़े “शराबी” के पांच हुरूफ़ की निस्बत से बरोज़े क़ियामत शराबी की 5 सज़ाएं

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 148 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब नेकियों की जज़ाएं और गुनाहों की सज़ाएं सफ़्ह़ा 22 ता 31 पर फ़क़ीह अबुल्लैष नस्र बिन मुह़म्मद समरक़न्दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی (मुतवफ़्फ़ा सि. 375 हि.) ने क़ियामत के दिन शराबी की मुख़्तलिफ़ सज़ाओं का तज़्किरा किया है। चुनान्चे,

क़ियामत में शराबी का हुल्या

﴾1﴿.... शराबी क़ियामत के दिन इस ह़ाल में आएगा कि उस का चेहरा सियाह, आंखें नीली और ज़बान सीने पर लटकती होगी और उस का लुआ़ब (या'नी थूक) ख़ून की त़रह़ बहता होगा। क़ियामत के दिन लोग उस को पहचानते होंगे। पस तुम उस को सलाम न करो। अगर बीमार हो जाए तो उस की इयादत न करो और जब मर जाए तो उस की नमाज़े जनाज़ा न पढ़ो (जब कि वोह शराब को ह़लाल जान कर पीता हो) क्यूंकि वोह अल्लाह तआ़ला के हां बुत परस्त की त़रह़ है।

मुर्दार से ज़ियादा बदबूदार

﴾2﴿.... शराबी क़ब्र से मुर्दार से भी ज़ियादा बदबूदार ह़ालत में निकलेगा कि उस की गर्दन में शराब की बोतल लटकी होगी और

हाथ में जाम होगा। सांप और बिच्छू उस के सारे जिस्म पर चिमटे होंगे। उस को आग की जूतियां पहनाई जाएंगी जिस से उस का दिमाग़ खोलता होगा। उस की क़ब्र जहन्नम के गढ़ों में से एक गढ़ा होगी जो फ़िरऔ़न व हामान के क़रीब होगी।

लोहे के गुर्ज़ों से इस्तिक़्बाल

﴾3﴿.... क़ियामत के दिन ज़ानियों और शराबियों को दोज़ख़ की त़रफ़ घसीटा जाएगा। जब वोह जहन्नम के क़रीब पहुंचेंगे तो उस के दरवाज़े उन के लिये खोल दिये जाएंगे और अ़ज़ाब के फ़िरिश्ते लोहे के गुर्ज़ों से उन का इस्तिक़्बाल करेंगे और उन को दुन्या के दिनों की गिनती के बराबर दोज़ख़ में मारते रहेंगे फिर उन्हें उन के ठिकाने पर पहुंचा देंगे और चालीस साल तक जहन्नमी के जिस्म के हर उ़ज़्व पर बिच्छू डंक मारते रहेंगे और सांप उस के सर पर डसते रहेंगे फिर भी वोह अपने मुक़र्ररा मक़ाम तक नहीं पहुंचेगा तो आग की लपट उसे आख़िरी कनारे तक पहुंचा देगी और फ़िरिश्ते उसे मारेंगे तो वोह जहन्नम में गिर जाएगा।

كُلَّمَا نَضِجَتْ جُلُوْدُهُمْ بَدَّلْنٰهُمْ جُلُوْدًا غَيْرَهَا لِيَذُوْقُوا الْعَذَابَ ؕ

(پ۵،النسآء:۵۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *जब कभी उन की खालें पक जाएंगी हम उन के सिवा और खालें उन्हें बदल देंगे कि अ़ज़ाब का मज़ा लें।*

फिर वोह प्यास की शिद्दत से चिल्लाते हुए कहेंगे : **हाए प्यास** ! **हाए प्यास** ! हमें पानी का एक ही घूंट पिला दो। इन पर मुक़र्रर अ़ज़ाब के फ़िरिश्ते जहन्नम के जोश मारते और खोलते हुए पानी के प्याले उन के सामने करेंगे। जब शराबी प्याले को मुंह लगाएगा तो उस के चेहरे का गोश्त झड़ जाएगा। फिर जब वोह खोलता हुवा पानी उस के पेट में पहुंचेगा तो उस की आंतों को काट देगा और वोह उस के पिछले मक़ाम से बाहर निकल जाएंगे। फिर आंतें अपनी ह़ालत पर लौट आएंगी फिर दोबारा अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार होगा। तो येह है शराबी की सज़ा।

शराबी की सज़ाओं का ख़ौफ़नाक मन्ज़र

﴾4﴿..... क़ियामत के दिन शराबी इस ह़ाल में आएगा कि उस की गरदन में शराब का बरतन लटक रहा होगा और उस के हाथ में लह्व व लअ़ब का आला होगा ह़त्ता कि वोह आग की सूली पर लटका दिया जाएगा तो एक मुनादी निदा करेगा : "येह फ़ुलां बिन फ़ुलां है।" उस के मुंह से बदबू ख़ारिज हो रही होगी और लोग उस पर ला'नत करते होंगे। फिर अ़ज़ाब के फ़िरिश्ते उसे आग की सूली से उतार कर जहन्नम में डाल देंगे जहां एक हज़ार साल तक जलता रहेगा। फिर पुकारेगा : "**हाए प्यास** ! **हाए प्यास** !" तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बदबू दार पसीना भेजेगा तो वोह पुकारेगा : "ऐ मेरे रब्ब عَزَّوَجَلَّ ! मुझ से इस पसीने को दूर फ़रमा।" लेकिन अभी वोह पसीना दूर न होगा कि आग आ जाएगी और उसे जला कर राख कर देगी।

फिर **अल्लाह** तबारक व तआ़ला उस को दोबारा आग में से पैदा फ़रमाएगा तो वोह खड़ा हो जाएगा। उस के दोनों हाथ और दोनों पाऊं बन्धे होंगे। उसे ज़न्जीरों के ज़रीए मुंह के बल घसीटा जाएगा। प्यास की वजह से चिल्लाएगा तो उसे खोलता हुवा पानी पिलाया जाएगा। भूक के लिये फ़रियाद करेगा तो कांटेदार दरख़्त से खिलाया जाएगा जो उस के पेट में जोश मारता होगा।

(दोज़ख़ के निगरान फ़िरिश्ते) ह़ज़रते मालिक عَلَيْهِ السَّلَام के पास आग की जूतियां होंगी वोह शराबी को पहनाएंगे जिस से उस का दिमाग़ खोलने लगेगा यहां तक कि नाक और कान के रास्ते बह जाएगा। उस की दाढ़ें अंगारों की होंगी। उस के मुंह से आंग के शो'ले निकलेंगे। उस की आंतें कट कट कर उस की शर्मगाह से गिर पडेंगी। फिर उसे चिंगारियों और शो'लों के ऐसे ताबूत में रखा जाएगा जिस का अ़ज़ाब हज़ार साल के त़वील अ़र्से तक होगा और उस ताबूत का दहाना तंग होगा। उस के जिस्म से पीप बहता होगा। उस का रंग मुतग़य्यर हो चुका होगा। वोह फ़रियाद करेगा : "ऐ मेरे रब्ब عَزَّوَجَلَّ आग ने मेरे जिस्म को खा लिया है।"

हलाकत है! उस शख़्स के लिये कि जब वोह फ़रियाद करेगा तो उस पर रह़्म नहीं किया जाएगा। जब वोह निदा करेगा तो उसे जवाब नहीं दिया जाएगा। इस के बा'द प्यास की फ़रियाद करेगा तो ह़ज़रते मालिक عَلَيْهِ السَّلَام उसे खोलता पानी पीने को देंगे।

शराब ख़ोर जब उसे पकड़ेगा तो उस की उंगलियां कट कर गिर पड़ेंगी और जब उस को देखेगा तो उस की आंखें बह पड़ेंगी और रुख़्सार का गोश्त गिर पड़ेगा ।

फिर हज़ार साल के बा'द ताबूत से निकाला जाएगा और ऐसे क़ैदख़ाने में डाला जाएगा जिस में मटके की मानिन्द सांप और बिच्छू होंगे । वोह उसे अपने पाऊं तले रौंदेंगे । फिर उस के सर पर आग का पथ्थर रखा जाएगा । उस के बदन के जोड़ों में लोहा चढ़ा दिया जाएगा । उस के हाथों में ज़न्जीरें और गरदन में तौक़ होगा फिर उसे हज़ार साल के बा'द क़ैदख़ाने से निकाला जाएगा तो अ़ज़ाब के फ़िरिश्ते उसे पकड़ कर "**वेल**" नामी वादी की त़रफ़ ले चलेंगे । **येह जहन्नम की वादियों में से एक वादी है जो दीगर वादियों से ज़ियादा गर्म और ज़ियादा गहरी है । इस के सांप बिच्छू भी ज़ियादा हैं । शराबी हज़ार साल तक इस वादी में जलता रहेगा ।**

﴾5﴿.... शराबी अपनी क़ब्र से इस ह़ाल में उठेगा कि उस की पिन्डलियां सूजी हुई होंगी और उस की ज़बान उस के सीने पर लटकी हुई होगी और उस के पेट में आग आंतों को खा रही होगी तो वोह बुलन्द आवाज़ से चीख़ें चिल्लाएगा जिस से सारी मख़्लूक़ घबरा जाएगी जब कि बिच्छू उस के गोश्त पोस्त में डसते होंगे । उसे आग के जूते पहना दिये जाएंगे जिस से उस का दिमाग़ खोलता होगा । शराबी जहन्नम में फ़िरऔ़न और हामान के क़रीब होगा तो जिस ने शराबी को एक लुक़्मा खिलाया अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के

जिस्म पर सांप और बिच्छू मुसल्लत् कर देगा और जिस ने उस की कोई ह़ाजत पूरी की तो उस ने इस्लाम के ढाने पर मदद की और जिस ने उस को बत़ौरे क़र्ज़ कोई चीज़ दी उस ने क़त्ले मुस्लिम पर इआ़नत की और जिस ने उस की मजलिस इख़्तियार की **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस को अन्धा उठाएगा कि उस के पास कोई हुज्जत न होगी और शराबी से निकाह़ न करो। बीमार हो जाए तो उस की इ़यादत न करो। शराबी पर तौरात, ज़बूर, इन्जील और कुरआने मजीद में ला'नत की गई है। जिस ने (ह़लाल समझ कर) शराब पी, उस ने अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर नाज़िल कर्दा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के तमाम (अह़काम) को झुटला दिया और शराब को काफ़िर ही ह़लाल ठहराता है और मैं (या'नी इमामुल अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) इस से बेज़ार हूं। फिर येह कि शराबी प्यासा मरेगा और वोह हज़ार (1000) साल तक फ़रियाद करता रहेगा : **हाए प्यास ! हाए प्यास !** उस ज़ात की क़सम जिस ने मुझे ह़क़ के साथ मबऊ़स फ़रमाया ! शराबी क़ियामत में जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में ह़ाज़िर होगा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़िरिश्तों से फ़रमाएगा : "ऐ फ़िरिश्तो ! इसे पकड़ो।" तो उस के सामने सत्तर (70) हज़ार फ़िरिश्ते ज़ाहिर होंगे और उसे मुंह के बल घसीटेंगे। (फिर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :) मैं तुम्हें मज़ीद बताता हूं कि जिस शख़्स के दिल में कुरआने मजीद की सो आयात हों और वोह शराब पी ले तो क़ियामत के दिन कुरआने मजीद का हर ह़र्फ़ आ कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में उस शराबी से झगड़ा करेगा और जिस से कुरआने मजीद ने झगड़ा किया यक़ीनन वोह हलाक हो गया।

शराबी और जन्नती शराब

उन मोअमिनीन को जन्नत में शराबे त़हूर पिलाई जाएगी जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये दुन्या में नशा आवर शराब के क़रीब भी न जाएंगे और दुन्यावी शराब के नशे में धुत हो जाने वाले शराबी अगर तौबा किये बिग़ैर इस जहाने फ़ानी से कूच कर गए तो जन्नत की उस शराबे त़हूर से मह़रूम रहेंगे। चुनान्चे,

सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : ''हर नशा आवर चीज़ शराब है और हर नशा आवर चीज़ ह़राम है, **जिस ने दुन्या में शराब पी और तौबा किये बिग़ैर मर गया तो वोह आख़िरत में शराबे (त़हूर) न पियेगा।**''

(صحیح مسلم، کتاب الاشربۃ، باب بیان ان کل مسکر خمر وان کل خمر حرام، الحدیث:۲۰۰۳، ص۱۱۹۹)

शराबी और जन्नत की ख़ुश्बू

हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जन्नत की ख़ुश्बू पांच सो (500) साल की मसाफ़त से सूंघी जाएगी लेकिन अपने अ़मल पर फ़ख़्र करने वाला, नाफ़रमान और **शराब का आ़दी जन्नत की ख़ुश्बू नहीं पियेगा।**''

(المعجم الصغیر للطبرانی، الحدیث:۴۰۹، الجزء الاول، ص۱۴۵)

और बा'ज़ रिवायात में है कि शराबी पर सिर्फ़ जन्नत की ख़ुश्बू ही नहीं बल्कि उस पर जन्नत की हर ने'मत ह़राम होगी।

जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह हाकिम رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ ने एक रिवायत नक़्ल की है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "चार क़िस्म के लोग ऐसे हैं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर ह़क़ है कि न तो उन्हें जन्नत में दाख़िल करे और न ही उस की ने'मतें चखाए :

(1) शराब का आ़दी (2) सूद खाने वाला (3) बिग़ैर ह़क़ के यतीम का माल खाने वाला और (4) वालिदैन का नाफ़रमान।"

(المستدرک،کتاب البیوع، باب ان اربی الربا عرض الرجل المسلم،الحدیث:۲۳۰۷،ج۲،ص۳۳۸)

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْھُمَا से मरवी है कि सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "शराब का आ़दी जन्नत में दाख़िल होगा न वालिदैन का नाफ़रमान और न ही एह़सान जताने वाला।" ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْھُمَا फ़रमाते हैं : "येह फ़रमाने अक़्दस मुझ पर बहुत गिरां गुज़रा कि मोअमिनीन भी गुनाहों में मुब्तला हो जाते हैं। यहां तक कि मैं ने वालिदैन के नाफ़रमान के मुतअ़ल्लिक़ येह हुक्मे क़ुरआनी पाया :"

فَهَلْ عَسَيْتُمْ إِنْ تَوَلَّيْتُمْ أَنْ تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ وَتُقَطِّعُوا أَرْحَامَكُمْ ﴿۲۲﴾ (پ۲۶،محمد:۲۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तो क्या तुम्हारे येह लछ्छन (अन्दाज़) नज़र आते हैं कि अगर तुम्हें ह़ुकूमत मिले तो ज़मीन में फ़साद फैलाओ और अपने रिश्ते काट दो।*

और एह्सान जताने वाले के मुतअ़ल्लिक़ येह आयते मुबारका पाई :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُبْطِلُوْا صَدَقٰتِكُمْ بِالْمَنِّ وَالْاَذٰى ۙ (پ۳، البقرۃ:۲۶۴)

तर्जमए कन्जुल ईमान : अपने सदक़े बातिल न कर दो एह्सान रख कर और ईज़ा दे कर।

और शराब के मुतअ़ल्लिक़ येह फ़रमाने बारी तआ़ला पाया :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنَّمَا الْخَمْرُ وَالْمَيْسِرُ وَالْاَنْصَابُ وَالْاَزْلَامُ رِجْسٌ مِّنْ عَمَلِ الشَّيْطٰنِ فَاجْتَنِبُوْهُ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝۹۰ (پ۷، المائدۃ:۹۰)

तर्जमए कन्जुल ईमान : शराब और जूआ और बुत और पांसे नापाक ही हैं शैत़ानी काम तो इन से बचते रहना कि तुम फ़लाह़ पाओ

(المعجم الکبیر، الحدیث:۱۱۱۷۰، ج۱۱، ص۸۲)

याद रखिये कि शराब के आ़दी से मुराद येह नहीं जो हमेशा शराब पीता रहे बल्कि मुराद येह है कि जब उसे शराब मुयस्सर हो तो वोह पी ले और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ की वजह से शराब पीने से बाज़ न आए। (بحر الدموع، ص۱۶۷)

कर ले तौबा रब्ब की रह़मत है बड़ी

प्यारे इस्लामी भाइयो ! तौबा का दरवाज़ा बन्द होने से पहले पहले अपने मेहरबान रब्ब عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी से बचने के लिये शराब नोशी से तौबा कर लीजिये। अफ़्सोस है उस शख़्स पर जिस ने अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ की नाफ़रमानी की और उस का ठिकाना दोज़ख़

हुवा । जब तक जिस्म में रूह़ मौजूद है तौबा में जल्दी कीजिये क्यूंकि मौत यक़ीनी है और सर पर खड़ी है । तौबा में जल्दी कीजिये इस से पहले कि तौबा का दरवाज़ा बन्द हो जाए। चुनान्चे,

तौबा का दरवाज़ा

हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तौबा के लिये मग़रिब में एक दरवाज़ा बनाया है जिस की चौड़ाई सत्तर साल की राह है वोह उस वक़्त तक बन्द न होगा जब तक कि सूरज मग़रिब से तुलूअ़ न हो ।

(سنن الترمذی، مسند الکوفیین، حدیث صفوان بن عسال، الحدیث:۱۸۱۱۶، ج۶، ص۳۱۶)

कर ले तौबा रब्ब की रह़मत है बड़ी
क़ब्र में वरना सज़ा होगी कड़ी

शराबी वली बन गया

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 1548 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**फ़ैज़ाने सुन्नत**" जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 105 पर है कि ह़ज़रते सय्यिदुना बिशर ह़ाफ़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی तौबा से क़ब्ल बहुत बड़े शराबी थे। आप رَحْمَۃُ اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہ एक मरतबा शराब के नशे में धुत कहीं जा रहे थे कि रास्ते में एक काग़ज़ पर नज़र पड़ी जिस पर بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم लिखा हुवा था।

आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعالٰی علیہ ने ता'ज़ीमन उठा लिया और इत्र ख़रीद कर **मुअ़त्त़र** किया फिर उसे एक बुलन्द जगह पर अदब के साथ रख दिया।

उसी रात एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُاللّٰهِ تعالٰی علیہ ने ख़्वाब में सुना कि कोई कह रहा है : "**जाओ ! बिशर से कह दो कि तुम ने मेरे नाम को मुअ़त्त़र किया, इस की ता'ज़ीम की और इसे बुलन्द जगह रखा हम भी तुम्हें पाक करेंगे।**" उन बुज़ुर्ग ने दिल में सोचा कि बिशर तो शराबी है। शायद मुझे ख़्वाब में ग़लत़ फ़हमी हुई है। चुनान्चे उन्हों ने वुज़ू किया, नफ़्ल पढ़े और फिर सो रहे। दूसरी और तीसरी बार भी येही ख़्वाब देखा और येह भी सुना कि : "हमारा येह पैग़ाम बिशर ही की त़रफ़ है, जाओ ! उन्हें हमारा पैग़ाम पहुंचा दो !" चुनान्चे वोह बुज़ुर्ग رَحْمَةُاللّٰهِ تعالٰی علیہ हज़रते बिशर رَحْمَةُاللّٰهِ تعالٰی علیہ की तलाश में निकल पड़े। उन को पता चला कि वोह शराब की मह़फ़िल में हैं तो वहां पहुंचे और बिशर को आवाज़ दी। लोगों ने बताया कि वोह तो नशे में बद मस्त हैं ! उन्हों ने कहा : "उन्हें जा कर किसी त़रह़ बता दो कि एक आदमी आप के नाम कोई पैग़ाम लाया है और वोह बाहर खड़ा है।" किसी ने जा कर अन्दर ख़बर दी। ह़ज़रते सय्यिदुना बिशर ह़ाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِي ने फ़रमाया : "उस से पूछो कि वोह किस का पैग़ाम लाया है ?" दरयाफ़्त करने पर वोह बुज़ुर्ग رَحْمَةُاللّٰهِ تعالٰی علیہ

फ़रमाने लगे : “**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का पैग़ाम लाया हू।” जब आप رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه को येह बात बताई गई तो झूम उठे और फ़ौरन नंगे पाऊं बाहर तशरीफ़ ले आए पैग़ामे ह़क़ सुन कर सच्चे दिल से तौबा की और उस बुलन्द मक़ाम पर जा पहुंचे कि मुशाहिदए ह़क़ के ग़लबे की शिद्दत से नंगे पाऊं रहने लगे। इसी लिये आप رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه ह़ाफ़ी (या'नी नंगे पाऊं वाला) के लक़ब से मशहूर हो गए।

(تذکرۃ الاولیاء، ص ۶۸)

__अल्लाह__ عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب!   صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

बा अदब बा नसीब बे अदब बे नसीब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का नाम लिखे हुए काग़ज़ के टुकड़े का अदब करने से एक सख़्त गुनहगार और शराबी **वलिय्युल्लाह** बन गया तो जिन के दिलों में **रब्बुल अनाम** عَزَّوَجَلَّ का नाम कन्दा (کُنْدَہ) है और जिन के क़ुलूब ज़िक्रुल्लाह से मा'मूर हैं उन नुफ़ूसे क़ुदसिय्या के अदब के सबब हम गुनहगार, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम से क्यूं बहरा वर न होंगे? नीज़ जो तमाम औलिया व अम्बिया के भी आक़ा हैं या'नी सय्यिदुल अम्बिया, अह़मदे मुज्तबा, मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم इन का अदब हमारे रब्ब عَزَّوَجَلَّ को किस क़दर मह़बूब होगा। यक़ीनन किसी शान वाले के नाम का अदब अज्रो षवाब का मूजिब है। ह़ज़रते सय्यिदुना बिशर ह़ाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِي ने **अल्लाह** रब्बुल

इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ के नाम का अदब किया तो अ़ज़्मत पाई। तो आज हम अगर शहनशाहे आ़ली नसब, सुल्ता़ने अ़रब, मह़बूबे रब्ब صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के नामे पाक का अदब करें, जहां सुनें तो चूम कर आंखों से लगा लें तो क्यूंकर इ़ज़्ज़त न पाएंगे? ह़ज़रते सय्यिदुना बिशर हा़फ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِى ने जहां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का नाम देखा वहां इ़त्र लगाया तो पाक हो गए, हम भी जहां ज़िक्रे रिसालत मआब صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم हो वहां अ़रक़े गुलाब छिड़कें तो क्यूं पाक न होंगे?

क्या महकते हैं महकने वाले
बू पे चलते हैं भटकने वाले
आ़सियों! थाम लो दामन उन का
वोह नहीं हाथ झटकने वाले

(ह़दाइके़ बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب !　　صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

शराबी की बख़्शिश हो गई

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्ता़र क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने : **"फ़ैज़ाने सुन्नत"** जिल्द अव्वल सफ़्ह़ा 95 में एक वाक़िआ़ ऐसा भी नक़्ल फ़रमाया है जिस में एक शराबी की मग़्फ़िरत का तज़्किरा है। चुनान्चे,

आप नक़्ल फ़रमाते हैं कि एक नेक आदमी ने अपने भाई को नशा करने के बाइ़ष अपने पास बुला कर सज़ा दी, वापसी में वोह पानी में डूब कर फ़ौत हो गया। जब उसे दफ़्न कर चुके तो उसी रात उस नेक शख़्स ने ख़्वाब देखा कि उस का मर्हूम भाई जन्नत में टहल रहा है। उस ने पूछा : **"तू तो शराबी था और नशे ही की ह़ालत में मरा फिर तुझे जन्नत कैसे नसीब हुई ?"**

वोह कहने लगा : "आप से मार खाने के बा'द जब मैं वापस हुवा तो राह में एक काग़ज़ देखा जिस पर بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ तह़रीर था, मैं ने उसे उठाया और निगल लिया। फिर पानी में गिर गया और दम निकल गया। जब क़ब्र में पहुंचा तो मुन्कर नकीर के सुवालात पर मैं ने अ़र्ज़ किया आप मुझ से सुवालात फ़रमा रहे हैं ह़ालांकि मेरे प्यारे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ का पाक नाम मेरे पेट में मौजूद है। इतने में ग़ैब से आवाज़ आई صَدَقَ عَبۡدِیۡ قَدۡغَفَرۡتُ لَہٗ या'नी मेरा बन्दा सच कहता है बेशक मैं ने इसे बख़्श दिया।" (نُزھۃُ المجالس، ج اوّل،ص ٤١)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर कोई नामए आ'माल की सियाही की वजह से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से इस क़दर दूर हो जाए कि उसे ज़िन्दगी भर तौबा का मौक़अ़ न मिले तो उस के अन्जाम पर सिवाए अफ़्सोस के कुछ नहीं किया जा सकता। चुनान्चे,

भयानक क़ब्रें

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ 32 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**कफ़न चोरों के इन्किशाफ़ात**" सफ़्ह़ा 5 ता 8 पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त़्त़ार क़ादिरी دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं कि एक बार ख़लीफ़ा अ़ब्दुल मलिक के पास एक शख़्स घबराया हुवा ह़ाज़िर हुवा और कहने लगा :"आ़ली जाह ! मैं बेह़द गुनहगार हूं और जानना चाहता हूं कि मेरे लिये मुआ़फ़ी भी है या नहीं ?" ख़लीफ़ा ने कहा : "क्या तेरा गुनाह ज़मीनो आस्मान से भी बड़ा है ?" उस ने कहा : "बड़ा है।" ख़लीफ़ा ने पूछा : "क्या तेरा गुनाह लौह़ो क़लम से भी बड़ा है ?" जवाब दिया : "बड़ा है।" पूछा : "क्या तेरा गुनाह अ़र्श व कुर्सी से भी बड़ा है ?" जवाब दिया : "बड़ा है।" ख़लीफ़ा ने कहा : "भाई यक़ीनन तेरा गुनाह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से तो बड़ा नहीं हो सकता।" येह सुन कर उस के सीने में थमा हुवा तूफ़ान आंखों के ज़रीए उमंड आया और वोह दहाड़ें मार मार कर रोने लगा। ख़लीफ़ा ने कहा : "भाई आख़िर मुझे पता भी तो चले कि तुम्हारा गुनाह क्या है ?"इस पर उस ने कहा : "हु़ज़ूर ! मुझे आप को बताते हुए बेह़द नदामत हो रही है ताहम अ़र्ज़ किये देता हूं, शायद मेरी तौबा की कोई सूरत निकल आए।"

येह कह कर उस ने अपनी दास्ताने दहशत निशान सुनानी शुरूअ़ की । कहने लगा : आ़ली जाह ! मैं एक कफ़न चोर हूं । आज रात मैं ने पांच क़ब्रों से इ़ब्रत ह़ासिल की और तौबा पर आमादा हुवा ।

शराबी का अन्जाम

कफ़न चुराने की ग़रज़ से मैं ने जब पहली क़ब्र खोदी तो **मुर्दे का मुंह क़िब्ले से फिरा हुवा था ।** मैं ख़ौफ़ज़दा हो कर जूं ही पलटा कि एक ग़ैबी आवाज़ ने मुझे चोंका दिया । कोई कह रहा था : "इस मुर्दे से अ़ज़ाब का सबब तो दरयाफ़्त कर ले ।" मैं ने घबरा कर कहा : "मुझ में हिम्मत नहीं, तुम ही बताओ ! आवाज़ आई : "येह शख़्स शराबी और ज़ानी था ।"

क़ब्र रोज़ाना येह करती है पुकार
मुझ में हैं कीड़े मकोड़े बे शुमार

ख़िन्ज़ीर नुमा मुर्दा

दूसरी क़ब्र खोदी तो एक दिल हिला देने वाला मन्ज़र मेरी आंखों के सामने था । क्या देखता हूं कि मुर्दे का मुंह ख़िन्ज़ीर जैसा हो चुका है और तौक़ व ज़न्जीर में जकड़ा हुवा है । ग़ैब से आवाज़ आई : येह झूटी क़स्में खाता और ह़राम रोज़ी कमाता था ।

याद रख मैं हूं अन्धेरी कोठड़ी
तुज को होगी मुझ में सुन वह़शत बड़ी
मेरे अन्दर तू अकेला आएगा
हां मगर आ'माल लेता आएगा

आग की कीलें

तीसरी क़ब्र खोदी तो उस में भी एक भयानक मन्ज़र था। मुर्दा गुद्दी की त़रफ़ ज़बान निकाले हुए था और उस के जिस्म में आग की कीलें ठुकी हुई थीं। ग़ैबी आवाज़ ने बताया येह ग़ीबत करता, चुग़ली खाता और लोगों को आपस में लड़वाता था।

नर्म बिस्तर घर पे ही रह जाएंगे
तुझ को फ़र्शे ख़ाक पर दफ़्नाएंगे

आग की लपेट में

चौथी क़ब्र खोदी तो मेरी निगाहों के सामने एक बेह़द सनसनी खेज़ मन्ज़र था ! **मुर्दा आग में उलट पुलट हो रहा था** और फ़िरिश्ते उस को आग के गुर्ज़ों (या'नी आतशीं हथोड़ों) से मार रहे थे। मुझ पर एक दम दहशत त़ारी हो गई और मैं भाग खड़ा हुवा। मगर मेरे कानों में एक ग़ैबी आवाज़ गूंज रही थी कि येह बद नसीब नमाज़ और रोज़ए रमज़ान में सुस्ती किया करता था।

जवानी में तौबा का इन्आ़म

पांचवीं क़ब्र खोदी तो उस की ह़ालत गुज़श्ता चारों क़ब्रों से बिल्कुल बर अ़क्स थी। **क़ब्र ह़द्दे नज़र तक वसीअ़ थी**, अन्दर एक तख़्त पर ख़ूबरू नौजवान बैठा हुवा था। ग़ैबी आवाज़ ने बताया : इस ने जवानी में तौबा कर ली थी और नमाज़ रोज़े का सख़्ती से पाबन्द था। (تذکرۃ الواعظین، ص ٦١٢ تا ٦١٥)

जो मुसलमान बन्दा नेको कार है
रब्ब के महबूब का आ़शिके ज़ार है
क़ब्र भी उस की जन्नत का गुलज़ार है
बाग़े फ़िरदौस का भी वोह ह़क़दार है

शराबी की हिदायत का सबब

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ 413 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**उ़यूनुल ह़िकायात (मुतर्जम)**" हि़स्सए अव्वल सफ़ह़ा 164 पर है कि ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ बिन ह़सन رحمۃ اللہ تعالی علیہ फ़रमाते हैं कि एक मरतबा मैं ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى के साथ एक तालाब के कनारे मौजूद था। अचानक हमारी नज़र एक बहुत बड़े बिच्छू पर पड़ी जो तालाब के कनारे बैठा हुवा था, इतनी देर में बड़ा सा मेंडक तालाब से निकला और वोह उस बिच्छू के क़रीब कनारे पर आ गया। बिच्छू उस मेंडक पर सुवार हुवा और मेंडक उसे ले कर तैरता हुवा तालाब के दूसरे कनारे की त़रफ़ बढ़ने लगा। येह मन्ज़र देख कर ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ने मुझ से फ़रमाया : "चलो ! हम भी तालाब के दूसरे कनारे चलते हैं उस त़रफ़ ज़रूर कोई अ़जीबो ग़रीब वाक़िआ़ पेश आने वाला है।" चुनान्चे,

हम भी तालाब के दूसरे कनारे पहुंचे, कनारे पर पहुंच कर मेंडक ने बिच्छू को उतारा तो वोह तेज़ी से एक सम्त चलने लगा। हम भी उस के पीछे पीछे चलने लगे, कुछ दूर जा कर हम ने एक अ़जीबो ग़रीब ख़ौफ़नाक मन्ज़र देखा। एक नौजवान नशे की ह़ालत में बेहोश पड़ा है और एक अज़्दहा उस नौजवान की जानिब बढ़ रहा है, उस अज़्दहे ने नौजवान के सीने पर चढ़ कर जैसे ही उसे डसना चाहा बिच्छू ने उस पर ह़म्ला किया और उस को ऐसा ज़हरीला डंक मारा कि वोह अज़्दहा तड़पने लगा और नौजवान के जिस्म से दूर हट गया फिर तड़प तड़प कर मर गया, जब सांप मर गया तो बिच्छू वापस तालाब की तरफ़ गया। वहां मेंडक पहले ही मौजूद था। उस पर सुवार हो कर बिच्छू दोबारा दूसरे कनारे की त़रफ़ चला गया।

फ़ानूस बन कर जिस की हि़फ़ाज़त हवा करे

वोह शम्अ़ क्या बुझे जिसे रोशन ख़ुदा करे

हम उस नौजवान के पास आए, वोह अभी तक नशे की ह़ालत में बेहोश पड़ा था। ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی ने उस शख़्स को हिलाया तो उस ने आंखें खोल दीं, आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : "ऐ नौजवान ! देख तेरे पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ने किस त़रह़ तेरी जान बचाई है, येह जो मुर्दा सांप तू देख रहा है, येह तुझे हलाक करने आया था लेकिन

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तेरी हिफ़ाज़त इस त़रह़ की, कि तालाब के दूसरे कनारे से एक बिच्छू ने आ कर इस अज़्दहे को मार डाला और इस त़रह़ तू मह़फ़ूज़ रहा। फिर आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने उस नौजवान को सारा वाक़िआ़ बताया और येह अश्आ़र पढ़ने लगे :

يَا غَافِلًا وَ الْجَلِيلُ يحْرُسه مِنْ
كُلِّ سُوْءٍ يَدُوْرُ فِي الظُّلَمِ
كَيْفَ تَنَامُ الْعُيُوْنُ عَنْ مَلِكٍ
يَأْتِيْكَ مِنْهُ فَوَائِدُ النِّعَمِ

तर्जमा : ऐ ग़ाफ़िल ! (उठ) रब्बे जलील (अपने बन्दे की) हर उस बुराई से हिफ़ाज़त करता है जो अन्धेरों में घूमती है, फिर तेरी आंखें उस मालिके ह़क़ीक़ी से ग़ाफ़िल हो कर क्यूं सो गईं जिस की त़रफ़ से तुझे ने'मतों के फ़ाइदे पहुंचते हैं।

नौजवान ने आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की ज़बाने बा अषर से जब येह ह़िक्मत भरे अश्आ़र सुने तो वोह ख़्वाबे ग़फ़्लत से जाग गया और अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में ताइब हो कर कहने लगा : "ऐ मेरे पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ जब तू अपने नाफ़रमान बन्दों के साथ ऐसा रह़मत भरा बरताव करता है तो अपने इत़ाअ़त गुज़ार बन्दों पर तेरी रह़मत की बरसात किस क़दर होती होगी !"

इस के बा'द वोह नौजवान एक जानिब जाने लगा तो मैं ने उस से पूछा : "ऐ नौजवान ! कहां का इरादा है ?" उस ने कहा : "अब मैं जंगलों में अपने रब عَزَّوَجَلَّ की इबादत करूंगा और ख़ुदा की क़सम ! मैं आयन्दा कभी भी दुन्या की रंगीनियों की त़रफ़ इल्तिफ़ात न करूंगा और शहर की त़रफ़ कभी भी क़दम न बढ़ाऊंगा ।" इतना कहने के बा'द वोह नौजवान जंगल की त़रफ़ रवाना हो गया ।

थाम ले दामने शाहे लौलाक तू
सच्ची तौबा से हो जाएगा पाक तू
जो भी दुन्या से आक़ा का ग़म ले गया
वोह तो बाज़ी ख़ुदा की क़सम ले गया

हम क्यूं परेशान हैं ?

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه मजीद फ़रमाते हैं कि

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ हम मुसलमान हैं और मुसलमान का हर काम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़ुशनूदी के लिये होना चाहिये । मगर अफ़्सोस ! आज हमारी अकषरिय्यत नेकी के रास्ते से दूर होती जा रही है, शायद इसी वजह से हमें त़रह़ त़रह़ की परेशानियों का सामना है ।

कोई बीमार है तो कोई क़र्ज़दार, कोई घरेलू नाचाक़ियों का शिकार है तो कोई तंग दस्तो बेरोज़गार, कोई अवलाद का त़लबगार है तो कोई नाफ़रमान अवलाद की वजह से बेज़ार। **अल ग़रज़** हर एक किसी न किसी मुसीबत में गिरिफ़्तार है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ कुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है :

وَمَآ اَصَابَكُمْ مِّنْ مُّصِيْبَةٍ فَبِمَا كَسَبَتْ اَيْدِيْكُمْ وَيَعْفُوْا عَنْ كَثِيْرٍ ﴿۳۰﴾ (پ۲۵، الشورى ۳۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और तुम्हें जो मुसीबत पहुंची वोह इस सबब से है जो तुम्हारे हाथों ने कमाया और बहुत कुछ तो मुआफ़ फ़रमा देता है।*

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यक़ीनन दुन्या व आख़िरत की हर परेशानी का ह़ल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की फ़रमां बरदारी में है। मन्क़ूल है مَنْ كَانَ لِلّٰهِ كَانَ اللّٰهُ لَه या'नी "जो शख़्स **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमां बरदार बन जाता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस का कारसाज़ व मददगार बन जाता है।" (تفسیر روح البیان، سورۃ لقمان، تحت الآیۃ: ۴، ج ۷ ص ۶۴)

नमाज़ की बरकतें

मुसलमानों के लिये सब से पहला फ़र्ज़ नमाज़ है मगर अफ़्सोस कि आज हमारी मस्जिदें वीरान हैं। यक़ीनन नमाज़ दीन का सुतून है, नमाज़ **अल्लाह** तआला की ख़ुश्नूदी का सबब है,

नमाज़ से रह़मत नाज़िल होती है, नमाज़ से गुनाह मुआ़फ़ होते हैं, नमाज़ बीमारियों से बचाती है। नमाज़ दुआ़ओं की क़बूलिय्यत का सबब है, नमाज़ से रोज़ी में बरकत होती है, नमाज़ अन्धेरी क़ब्र का चराग़ है, नमाज़ अ़ज़ाबे क़ब्र से बचाती है, नमाज़ जन्नत की कुन्जी है, नमाज़ पुल सिरात़ के लिये आसानी है, नमाज़ जहन्नम के अ़ज़ाब से बचाती है, नमाज़ मीठे मीठे आक़ा صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की आंखों की ठंडक है। नमाज़ी को ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त नसीब होगी और नमाज़ी के लिये सब से बड़ी ने'मत येह है कि उसे बरोज़े क़ियामत **अल्लाह** तआ़ला का दीदार होगा।

बे नमाज़ी का हौलनाक अन्जाम

बे नमाज़ी से **अल्लाह** तआ़ला नाराज़ होता है। जो जान बूझ कर एक नमाज़ छोड़ देता है उस का नाम जहन्नम के दरवाज़े पर लिख दिया जाता है। नमाज़ में सुस्ती करने वाले को क़ब्र इस त़रह़ दबाएगी कि उस की पसलियां टूट फूट कर एक दूसरे में पैवस्त हो जाएंगी, उस की क़ब्र में आग भड़का दी जाएगी और उस पर एक गंजा सांप मुसल्लत़ कर दिया जाएगा नीज़ क़ियामत के रोज़ उस का ह़िसाब सख़्ती से लिया जाएगा।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर आप वाक़ेई नमाज़, रोज़ा व दीगर इबादात की पाबन्दी के साथ साथ शराब व दीगर बुराइयों से बचना चाहते हैं तो इस के लिये क़ुरआनो सुन्नत की

आ़लमगीर गै़र सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाइये । चुनान्चे दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल की बरकत से बे शुमार गुनाहगारों को तौबा की तौफ़ीक़ मिली । चुनान्चे,

शराबी, मुबल्लिग़ कैसे बना ?

बाबुल मदीना (कराची) के अ़लाक़े खारादर के मुक़ीम इस्लामी भाई का कुछ इस त़रह़ बयान है : हमारे अ़लाक़े में एक इन्तिहाई बद किरदार शख़्स रिहाइश पज़ीर था । वोह अपनी ह़रकतों की वजह से बहुत बदनाम था, लोग उसे बहुत समझाते मगर उस के कानों पर जूं तक न रेंगती । दीगर बुराइयों के साथ साथ दिन रात शराब के नशे में बदमस्त रहा करता । उस के शबो रोज़ बह़रे गुनाह में ग़ोत़ा ज़नी करते गुज़र रहे थे कि एक दिन किसी इस्लामी भाई ने उसे दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिर्कत की दा'वत दी । उस की ख़ुश नसीबी कि वोह इजतिमाअ़ में शरीक हो गया ।

जूंही इजतिमाअ़ में शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का सुन्नतों भरा बयान शुरूअ़ हुवा वोह सरापा इश्तियाक़ बन गया । जब रिक़्क़त अंगेज़ बयान की तासीर कानों के रास्ते उस के दिल में उतरी तो वहां से नदामत के चश्मे

फूट निकले जो आंखों के रास्ते आंसूओं की सूरत में बहने लगे। ख़ौफ़े ख़ुदा के सबब उस पर इतनी रिक़्क़त त़ारी हुई कि बयान के ख़त्म हो जाने के बा'द भी वोह बहुत देर तक सर झुकाए ज़ारो क़ित़ार रोता रहा।

फिर उस ने शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के हाथ पर बैअ़त हो कर हुज़ूरे ग़ौषे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم की ग़ुलामी का पट्टा अपने गले में डाल लिया। उस ने अपने साबिक़ा गुनाहों से तौबा कर के शराब को हमेशा के लिये तर्क करने का इरादा कर लिया। अचानक शराब छोड़ने की वजह से उस की त़बीअ़त शदीद ख़राब हो गई, किसी ने उन्हें मश्वरा दिया कि शराब एक दम नहीं छोड़ी जा सकती लिहाज़ा फ़िल ह़ाल थोड़ी बहुत पी लिया करो, थोड़ा सुकून मिल जाएगा फिर कम करते करते छोड़ देना, लेकिन उन्हों ने शराब पीने से साफ़ इन्कार कर दिया और तक्लीफ़ें उठा कर शराब से छुटकारा पा ही लिया। पांचों नमाज़ें मस्जिद में जमाअ़त के साथ पढ़ने को अपना मा'मूल बना लिया और चेहरे पर सुन्नत के मुत़ाबिक़ दाढ़ी शरीफ़ भी सजा ली। दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे मदनी माह़ोल ने उन की ज़िन्दगी बदल कर रख दी। दिन भर सुन्नत के मुत़ाबिक़ सफ़ेद लिबास में मल्बूस नज़र आते, हफ़्ते में एक दिन अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत में शरीक होते। दा'वते इस्लामी का मदनी काम करने की बरकत से उन्हें ऐसी मिलनसारी नसीब हुई कि जो कोई उन से मिलता, उन का गिरवीदा हो जाता।

एक दिन अचानक उन की त़बीअ़त ख़राब हो गई उन्हें हस्पताल में दाख़िल करवा दिया गया, कषरते क़ै व इस्हाल (दस्त) की वजह से निढ़ाल हो गए। उन की ह़ालत देख कर येही मह़सूस होता था कि शायद सिह़ह़त याब न हो सकेंगे। शाम के वक़्त अचानक बुलन्द आवाज़ से कलिमए त़य्यिबा لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ पढ़ा और उन की रूह़ क़फ़से उ़न्सुरी से परवाज़ कर गई। जब उन के इन्तिक़ाल की ख़बर अ़लाक़े में पहुंची तो उन से मह़ब्बत रखने वाला हर इस्लामी भाई उदास और मग़मूम दिखाई देने लगा। उस मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी के जनाज़े में कषीर इस्लामी भाई शरीक हुए। **उन की नमाज़े जनाज़ा उन के पीरो मुर्शिद, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी** دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِيَه **ने पढ़ाई**। इस्लामी भाई मुरीद के जनाज़े पर मुर्शिद की आमद पर फ़र्ते रश्क से अश्कबार हो गए।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ *की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो।*

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلّم

या रब्ब ! दिले मुस्लिम को वोह ज़िन्दा तमन्ना दे
जो क़ल्ब को गर्मा दे, जो रूह़ को तड़पा दे
फिर वादिये फ़ारां के हर ज़र्रे को चमका दे
फिर शौक़े तमाशा दे, फिर ज़ौक़े तक़ाज़ा दे
मह़रूमे तमाशा को फिर दीदए बीना दे
देखा है जो कुछ मैं ने, औरों को भी दिखला दे
भटके हुए आहो को फिर सूए ह़रम ले चल
उस शहर के ख़ूगर को फिर वुसअ़ते सह़रा दे
पैदा दिले वीरां में फिर शोरशे मेह़शर कर
इस मह़्मले ख़ाली को फिर शाहिदे लैला दे
इस दौर की ज़ुल्मत में हर क़ल्बे परेशां को
वोह दाग़े मह़ब्बत दे जो चांद को शर्मा दे
रिफ़्अ़त में मक़ासिद को हमदोशे षुरय्या कर
ख़ुद दारिये साह़िल दे, आज़ादिये दरिया दे
बे लोष मह़ब्बत हो , बे बाक सदाक़त हो
सीनों में उजाला कर, दिल सूरते मीना दे
एह़सास इनायत कर आषारे मुसीबत का
अमरोज़ की शोरश में अन्देशए फ़रदा दे
मैं बुलबुले नालां हूं इक उजड़े गुलिस्तां का
ताषीर का साइल हूं, मोह़ताज को दाता दे !

दा'वते इस्लामी की मर्कज़ी मजलिसे शूरा के निगरान हज़रते मौलाना मुह़म्मद इमरान अत्तारी سلّمہ الباری के तह़रीरी बयानात

त़ब्अ़ शुदा

«1».....फ़ैज़ाने मुर्शिद (कुल सफ़ह़ात : 32)
«2».....एह़सासे ज़िम्मेदारी (कुल सफ़ह़ात : 48)
«3».....जन्नत की तय्यारी (कुल सफ़ह़ात : 106)
«4».....वक़्फ़े मदीना (कुल सफ़ह़ात : 74)
«5».....मदनी कामों की तक़्सीम (कुल सफ़ह़ात : 22)
«6».....मदनी कामों की तक़्सीम के तक़ाज़े (कुल सफ़ह़ात : 52)
«7».....मदनी मश्वरे की अहम्मिय्यत (कुल सफ़ह़ात : 32)
«8».....सूद और उस का इलाज (कुल सफ़ह़ात : 92)
«9».....सीरते सय्यिदुनाअबुद्दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ (कुल सफ़ह़ात : 75)
«10».....प्यारे मुर्शिद (कुल सफ़ह़ात : 48)
«11».....बुराइयों की मां (कुल सफ़ह़ात : 112)
«12»......ग़ैरत मन्द शोहर
«13»......पीर पर ए'तिराज़ मन्अ़ है
«14»......हमें क्या हो गया है ?
«15»......फ़ैसला करने के मदनी फूल

ज़ेरे तरतीब

«16»......अमीरे अहले सुन्नत की दीनी ख़िदमात
«17»......अमीरे अहले सुन्नत और दा'वते इस्लामी
«18»......सह़ाबी की इनफ़िरादी कोशिश

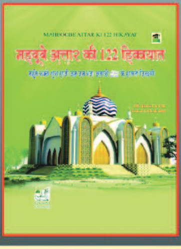

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के महके महके मदनी माह़ोल में ब कषरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा'रात इशा की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की मदनी इल्तिजा है, आ़शिक़ाने रसूल के मदनी क़ाफ़िलों में ब निय्यते षवाब सुन्नतों की तर्बिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना ''फ़िक्रे मदीना'' के ज़रीए मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह के इबतिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की हिफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि ''मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।'' اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये ''मदनी इन्आ़मात'' पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये ''मदनी क़ाफ़िलों'' में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

मक्तबतुल मदीना की मुख़्तलिफ़ शाख़ें

देहली : उर्दू मार्केट, मटया मह़ल, जामेअ़ मस्जिद, देहली-6 फ़ोन (011) 23284560

मुम्बई : 19, 20, मुह़म्मद अ़ली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429

नागपूर : ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, सैफ़ी नगर रोड, मोमिन पुरा, नागपूर : (M) 09373110621

अजमेर शरीफ़ : 19/216 फ़लाह़े दारैन मस्जिद, नाला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, अजमेर फ़ोन : 0145-2629385

हैदरआबाद : पानी की टंकी, मुग़ल पुरा, हैदरआबाद फ़ोन : 040-24572786

मक्तबतुल मदीना

सिलेक्टेड हाऊस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा,
अह़मदाबाद-1 , गुजरात, अल हिन्द MO. 9374031409

Web : www.dawateislami.net / E- mail:maktabaahmedabad@gmail.com